रचना

(अंक - 19)

2025

डी एम आर एल - डी आर डी ओ
DMRL - DRDO

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला
हैदराबाद

दूरदर्शिता

रक्षा तंत्रों के लिए पदार्थपरक समस्त समाधानों के लिए एक उत्कृष्ट केंद्र के रूप में उपस्थिति।

लक्ष्य

पदार्थों के मौलिक तथा आनुप्रायोगिक क्षेत्रों में शोध द्वारा नवीन पदार्थों और निर्माण-तकनीकों के विकास तथा संबद्ध पदार्थ-अभियंत्रण को आगे बढ़ाना।

गुणवत्ता नीति

- उत्कृष्ट पदार्थों, प्रौद्योगिकी प्रणालियों एवं संबंधित उत्पाद अभियांत्रिकी का अपने उपभोक्ताओं की आवश्यकता के अनुसार विकास करना।
- अनुसंधान और आधारभूत संरचना तथा मानव संसाधनों के उन्नयन के जरीए आवश्यकतानुसार अनुसरण एवं गुणवत्ता में लगातार सुधार करना।

डी. एम. आर. एल. की वार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका

रचना

अंक-19, वर्ष 2025

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल)
कंचनबाग, हैदराबाद – 500058

संपादक मंडल

संरक्षक

डॉ. रा बालमुरलीकृष्णन

निदेशक, डीएमआरएल एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

मुख्य संपादक

अमित कुमार, वैज्ञानिक - एफ

आर. शरत चन्द्र, वैज्ञानिक-ई

संपादक

एन बी जगताप, तकनीकी अधिकारी-डी एवं प्रभारी अधिकारी (राजभाषा अनुभाग)

पवन कुमार, सहायक निदेशक (राजभाषा)

संपादन सहयोग

अमित कुमार साहा, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी-I

विवेक कुमार मिश्रा, वैज्ञानिक-बी

आशीष कुमार मिश्र, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

डिजाईनिंग और टाईप सेटिंग

जय प्रकाश, तकनीकी अधिकारी-ए

विशेष आभार..

पापु , फोटोग्राफी अनुभाग

नोट – इस पत्रिका में लेखकों के व्यक्त विचारों के लिए वे स्वयं उत्तरदायी हैं। संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

डॉ. समिर वी. कामत
Dr. Samir V. Kamat

सत्यमेव जयते
भारत सरकार
Government of India

सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग
एवं
अध्यक्ष, डीआरडीओ
Secretary, Department of Defence R&D
&
Chairman, DRDO

संदेश

यह बड़े हर्ष का विषय है कि **रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल)** विगत वर्षों की भांति इस बार भी अपनी हिंदी गृह-पत्रिका **'रचना' अंक-19** का प्रकाशन करने जा रही है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि हिंदी में गृह-पत्रिकाओं के प्रकाशन से मौलिक चिंतन में अभिवृद्धि के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रयोग को भी बढ़ावा मिलता है।

गृह पत्रिका **'रचना'** प्रयोगशाला के कार्यों को प्रचलित करने के साथ-साथ अपने विचारों को राजभाषा हिंदी में व्यक्त करने के लिए प्रेरित करती है तथा हिंदी के व्यापक प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जिस प्रकार एक हार में रंग-बिरंगे मोती जुड़ने पर उसकी शोभा बढ़ जाती है उसी प्रकार हमारे देश की अनेकों भाषाओं एवं उनकी साहित्यिक व वैचारिक अभिव्यक्ति को एकता के सूत्र में बांधने के लिए राजभाषा हिंदी ने सदैव ही अग्रणी भूमिका निभाई है।

हिंदी गृह पत्रिका **'रचना'** हेतु मैं संरक्षक, संपादक मण्डल एवं इससे जुड़े साथी कार्मिक बंधुओं को धन्यवाद देता हूँ तथा पत्रिका के प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

स्थान: नई दिल्ली
दिनांक: 31 **जनवरी, 2026**

समिर कामत
(डॉ. समिर वी. कामत)

आर वी हरा प्रसाद
विशिष्ट वैज्ञानिक एवं
महानिदेशक (एनएस एवं एम)

R V Hara Prasad
Distinguished Scientist &
Director General (NS & M)

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

रक्षा मंत्रालय
MINISTRY OF DEFENCE
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
DEFENCE RESEARCH & DEVELOPMENT ORGANISATION

संदेश

यह बड़े खुशी की बात है कि **'रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल), हैदराबाद** अपनी हिंदी गृह-पत्रिका **'रचना'** के 19वें अंक का प्रकाशन करने जा रही है। यह प्रयोगशाला एवं कार्मिकों के राजभाषा के प्रति लगाव को दर्शाता है।

केंद्र सरकार के कार्यालयों द्वारा हिंदी में गृह-पत्रिका का प्रकाशन कार्यालयीन परिवेश में राजभाषा के लिए अनुकूल एवं प्रेरणादायक वातावरण तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है। पत्रिकाएं मानव मन के विचारों एवं अनुभूतियों को स्वभाषा में अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम के रूप में उभर आयी है। हिंदी पत्रिकाओं का यह मंच अवसर के साथ-साथ नवोन्मेषी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है तथा पाठकों को अलग-अलग विचारधाराओं से परिचित होने के साथ-साथ कुछ सीखने का अवसर भी प्रदान करता है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि **'रचना'** पत्रिका के प्रकाशन से राजभाषा के प्रचार-प्रसार को बल मिलेगा। पत्रिका के प्रकाशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले संपादक मण्डल तथा इससे जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं। मैं आशा करता हूँ कि यह सराहनीय कार्य आगे भी जारी रहेगा।

स्थान: नई दिल्ली
दिनांक: 28 जनवरी, 2026

(आर वी हरा प्रसाद)

Main Office : - NSTL Campus, Vigyan Nagar, Visakhapatnam-530027, Tel : (O) 0891-2586700, 2558961, Fax : 0891-2558258
Delhi Office : 29, DRDO Bhawan, Rajaji Marg, New Delhi-110011, Tel : (O) 23016706, 23016640, Fax : 011-23010573, E-mail : dgnsm.hqr@gov.in

डॉ. रविन्द्र सिंह
उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं
महानिदेशक (आर. एण्ड एम.)
Dr. Ravindra Singh
Outstanding Scientist &
Director General (R & M)

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

भारत सरकार
रक्षा मंत्रालय
अनुसंधान तथा विकास संगठन
101, डी आर डी ओ भवन, राजाजी मार्ग
नई दिल्ली-110 011, भारत
Government of India
Ministry of Defence
Defence Research & Development Organisation
101, DRDO Bhawan, Rajaji Marg
New Delhi-110 011, India

संदेश

मुझे यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि **'रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला' (डीएमआरएल), हैदराबाद** द्वारा हिंदी गृह पत्रिका **'रचना' अंक 19** का प्रकाशन किया जा रहा है।

वैश्विक स्तर पर हिंदी एक महत्वपूर्ण भाषा बनती जा रही है। विदेशों में कई विश्वविद्यालयों में भी हिंदी पढ़ाई जाती है। हिंदी का शब्द भंडार काफी समृद्ध है जिसमें अन्य भाषाओं के कई शब्दों को स्थान दिया गया है। इसे और अधिक विकसित एवं परिष्कृत करने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। हिंदी केवल साहित्य की भाषा नहीं है अपितु संपर्क भाषा के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। वर्तमान में शिक्षा के कई क्षेत्र, चिकित्सा, अभियांत्रिकी और वाणिज्य में हिंदी की प्रचुरता में वृद्धि हुई है। तकनीकी रूप से विकसित अन्य देशों की तरह हमें भी निज भाषा में कार्य करने की परंपरा को गंभीरता से अपनाना होगा, तभी हम विश्व पटल पर विकास करते हुए वांछित उपलब्धि प्राप्त कर सकते हैं।

राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने वाले कार्मिकों तथा गृह पत्रिका **'रचना'** के 19वें अंक के लिए मैं संरक्षक तथा प्रकाशन से जुड़े अन्य सभी कार्मिकों को शुभकामनाएँ देता हूँ।

स्थान: नई दिल्ली
दिनांक: 28 **जनवरी, 2026**

रविन्द्र सिंह
(डॉ रविन्द्र सिंह)

दूरभाष/Phone : 011-23011860 फैक्स/Fax : 011-23015395
ई-मेल/E-mail : dgrm.hqr@gov.in

विपिन कुमार कौशिक
उत्कृष्ट वैज्ञानिक
एवं
निदेशक (डी पी ए आर ओ एंड एम)
Vipin Kumar Kaushik
OUTSTANDING SCIENTIST
&
DIRECTOR (DPARO&M)

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

अ.स.प.सं./DO No.
भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
Government of India, Ministry of Defence
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
Defence Research and Development Organisation
संसदीय कार्य, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय
Directorate of Parliamentary Affairs, Rajbhasha and Organisation & Methods (DPARO&M)
'ए' ब्लॉक, प्रथम तल
'A' Block, First Floor
डी.आर.डी.ओ. भवन, राजाजी मार्ग, नई दिल्ली-110011
DRDO Bhawan, Rajaji Marg, New Delhi-110011
दूरभाष/Telephone: 23013248, 23007125
फैक्स/Fax: 23011133, 23013059

दिनांक/Dated : ....

संदेश

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि **'रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल)** अपनी हिंदी गृह-पत्रिका **'रचना'** के 19वें अंक का प्रकाशन कर रहा है। डीआरडीओ की प्रयोगशालाएं राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर रही हैं।

हमने रक्षा क्षेत्र में की गई उपलब्धियों को 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान देखा। जब बात देश की रक्षा की आती है तो निश्चित रूप से नित्य नवीन शोध कार्य करने होंगे तथा नए दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ना होगा। इसके लिए दृढ़ संकल्प के साथ भाषाओं को संग लेकर चलना होगा। हम जानते हैं कि हिंदी भाषा के विकास की यात्रा काफी लंबी थी तथा आज इसका परिष्कृत रूप हम देखते हैं।

प्रत्येक वर्ष हमारी प्रयोगशालाओं की विविध गतिविधियों तथा किए गए शोध कार्यों की जानकारी हिंदी पत्रिकाओं के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। पत्रिकाएं पाठकों के लिए प्रेरणा स्रोत होती हैं। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय से समय-समय पर राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी दिशा-निर्देश प्राप्त होते हैं। अतः हमारा कर्तव्य है कि अपने कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन का अनुपालन सुनिश्चित करें तथा इसके लिए निरंतर प्रयास करते रहें।

मैं, हिंदी गृह पत्रिका **'रचना'** के 19वें अंक के प्रकाशन के लिए संरक्षक तथा प्रकाशन से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों को शुभकामनाएँ देता हूँ एवं इस अंक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

स्थान: नई दिल्ली
दिनांक: 13 जनवरी, 2026

(विपिन कुमार कौशिक)

E-mail : director-dpa.hqr@gov.in

डॉ आर बालमुरलीकृष्णन
उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक
Dr R Balamuralikrishnan
Outstanding Scientist & Director

सत्यमेव जयते

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
Government of India, Ministry of Defence
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
Defence Research & Development Organisation
रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला
DEFENCE METALLURGICAL RESEARCH LABORATORY
कंचनबाग डाकघर, हैदराबाद – 500058
Kanchanbagh, Hyderabad - 500058

संदेश

मेरे लिए यह प्रसन्नता की बात है कि हमारी **'रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला'** इस वर्ष अपनी हिंदी गृह पत्रिका **'रचना' के 19वें अंक** का प्रकाशन कर रही है। डीआरडीओ की प्रयोगशालाएं अपने कार्यक्षेत्र में गुणवत्ता के साथ विविध परियोजनाओं पर कार्य कर रही हैं। रक्षा उपकरणों को तैयार करने से पूर्व अनिवार्य धातुकर्मीय सामग्री की आवश्यकता होती है। अतः प्रयोक्ताओं की मांग के अनुसार धातुकर्मीय संबंधी शोध कार्यों के लिए डीएमआरएल एक समर्पित प्रयोगशाला है।

'रचना' पत्रिका कार्मिकों की आत्माभिव्यक्ति और ज्ञान का संग्रह है। यह पत्रिका वह मंच है जिसके माध्यम से वे अपने मनोभावों को व्यक्त कर पाते हैं और साथ ही राजभाषा का प्रचार-प्रसार भी होता है। इसके साथ प्रयोगशाला में हो रही विविध गतिविधियों से परिचित हो सकते हैं तथा राजभाषा में हो रहे विकास कार्यों एवं प्रयासों की जानकारी भी प्राप्त की जा सकती है।

मैं, सभी लेखकों तथा पत्रिका में योगदान देने वाले अन्य सभी कार्मिकों को धन्यवाद एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

दिनांकः 11 फरवरी 2026

(डॉ. रा. बालमुरलीकृष्णन)

Tele: (Off.) +91-40-24340681, +91-40-24340233, Fax: +91-40-24340080, (Res.) +91-40-24072186
E-mail: director.dmrl@gov.in

मेरे लिए यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि हमारी 'रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल)' अपनी हिंदी गृह पत्रिका 'रचना' के अंक 19 का प्रकाशन कर रही है। इस तथ्य से सभी परिचित हैं कि पत्रिकाएं हमारे वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति का एक सशक्त मंच है जो उनकी साहित्यिक प्रतिभा को प्रोत्साहित करती है तथा प्रयोगशाला की उपलब्धियों, अनुसंधान गतिविधियों तथा राष्ट्र की रक्षा में महत्वपूर्ण योगदान को भी प्रभावी रूप से प्रदर्शित करती हैं।

डीएमआरएल, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की एक प्रमुख प्रयोगशाला के रूप में उन्नत धातुकर्म एवं सामग्री विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रही है। ऐसे प्रतिष्ठित संस्थान में राजभाषा हिंदी का प्रयोग एवं प्रसार अत्यंत महत्वपूर्ण है। गृह-पत्रिका राजभाषा हिंदी के संवर्धन एवं उसके व्यावहारिक उपयोग को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा कर्मचारियों को हिंदी में लेखन हेतु प्रेरित करती है। मुझे विश्वास है कि गृह पत्रिका का यह अंक ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक एवं रोचक होगा तथा सभी पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

मैं इस पत्रिका के लेखकों एवं संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके उत्कृष्ट प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ, साथ ही आशा करता हूँ कि भविष्य में भी सभी का सहयोग एवं सक्रिय सहभागिता राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में निरंतर बनी रहेगी।

एन बी जगताप

तकनीकी अधिकारी-डी एवं प्रभारी अधिकारी (राजभाषा अनुभाग)

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
1.	डिजिटल इंडिया - चुनौतियाँ और सफलताएं	राजेश कुमार वैज्ञानिक - ई	1
2.	मिलेट्स	ए. सतीश कुमार तकनीकी अधिकारी - बी	4
3.	राष्ट्रीय भ्रष्टाचार महोत्सव	निशांत मनिष तकनीशियन – बी	9
4.	सामान्य पौधे से सबसे गंभीर बीमारियों के इलाज	जितेन दास वैज्ञानिक - एफ	14
5.	हार नहीं मानूंगी (कविता)	प्रियंका प्रियदर्शिनी बेहेरा वरिष्ठ तकनीकी सहायक - बी	17
6.	जेनरेशन जेड: नई सोच और वर्तमान परिदृश्य	रॉकी कुमार प्रशासनिक सहायक - ए	18
7.	युवा आज की तेज रफ्तार दुनिया में: डिजिटल जीवन, कैरियर दबाव और मानसिक स्वास्थ्य का संतुलन	भोनगिरी प्रसुना वैज्ञानिक - बी	20
8.	अमर सिपाही (कविता)	प्रियंका प्रियदर्शिनी बेहेरा वरिष्ठ तकनीकी सहायक - बी	22
9.	कृतज्ञता : जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू	निशा राजपूत प्रशासनिक सहायक - ए	23
10.	कंक्रीट के ढेर (कविता)	सिद्धार्थ गिरधर तकनीकी अधिकारी - बी	24
11.	अनुशासन	रोहित तकनीशियन - ए	27
12.	अपना मन	प्रियदर्शी सिंह तकनीकी अधिकारी - ए	29
13.	जीवनदात्री प्रकृति	सुमन आशुलिपिक - II	30
14.	दयालुता का महत्व	एस भानु प्रकाश तकनीकी अधिकारी - ए	31
15.	मुंशी प्रेमचंद : कार्य व जीवनी	विक्रांत जे. ताकसाण्डे तकनीकी अधिकारी - बी	34
16.	डोली में नहीं विदा होते बेटे.....(कविता)	सूरज कुमार मण्डल तकनीशियन - ए	37

17.	ऑपरेशन सिंदूर : आतंकवाद विरोधी कदम	सुमित कुमार वरिष्ठ तकनीकी सहायक - बी	38
18.	गौतम बुद्ध एवं उनके अनमोल वचन	जय प्रकाश तकनीकी अधिकारी - ए	40
19.	नौकरी: संघर्ष से सफलता तक की यात्रा	ममता प्रशासनिक सहायक - ए	42
20.	'आनंद का नगर' कोलकाता	शिल्पी बिश्वास तकनीशियन-बी	44
21.	भाषा की संरचना, स्वरुप एवं लक्षण	सचिन तकनीकी अधिकारी - बी	46
22.	संघर्ष और सफलता (कविता)	नीरज कुमार बरनवाल तकनीकी अधिकारी - ए	47
23.	स्वच्छता	मोनु कुमार भण्डार सहायक - ए	48
24.	भारतीय संस्कृति और उसका महत्व	अंकित प्रशासनिक सहायक - ए	50
25.	मेरे गाँव की यादें	आशीष अरुण नौकरकर तकनीशियन - बी	52
26.	सोशल मीडिया और युवा: एक गहरा प्रभाव	पाझारे निरज शंकर राव प्रशासनिक सहायक - ए	54
27.	रामधारी सिंह 'दिनकर'	जयकिशोर कुमार तकनीशियन – ए	56
28.	कार्यशील महिला	एम.स्वप्ना कुमारी वरिष्ठ प्रशासनिक सहायक - ए	57
29.	आत्मसंतोष	मानसी शर्मा आशुलिपिक - II	58
30.	स्वार्थी समाज	जीबन कुमार दास वरिष्ठ तकनीकी सहायक - बी	60
31.	पानी रे पानी	जगबीर तकनीकी अधिकारी - ए	62
32.	संघर्ष से सफलता का सफर	सौरभ कुमार तकनीशियन - ए	64
33.	डी.एम.आर.एल. में राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ		66
34.	डी.एम.आर.एल. गतिविधियों की झलकियाँ		80

डिजिटल इंडिया - चुनौतियाँ और सफलताएं

राजेश कुमार
वैज्ञानिक - ई

डिजिटल इंडिया प्रोग्राम भारत को समृद्ध करने की दिशा में भारत सरकार की नई पहल है। इसका प्रमुख उद्देश्य देश को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नये कीर्तिमान गढ़ना है। इसके द्वारा देश को डिजिटल रुप से सशक्त करना एकमेव लक्ष्य है। वर्तमान युग में आज वही देश आगे हैं जिसने विज्ञान और तकनीकी को अपने देश की तरक्की का माध्यम बना लिया है। सरकार द्वारा डिजिटल इंडिया अभियान 1 जुलाई 2015 को शुरू किया गया। इस अभियान का उद्देश्य इंटरनेट के माध्यम से देश में डिजिटल क्रांति लाना है, साथ ही इंटरनेट को सशक्त करके भारत के तकनीकी पक्ष को मजबूत करना है। देश को डिजिटल रूप से विकसित करने और देश के आईटी संस्थान में सुधार करने के लिए, डिजिटल इंडिया एक महत्वपूर्ण पहल है। यह परियोजना उन गाँव के लोगों के लिए सबसे उपयोगी है जो देश के सुदूर इलाके में बसे हुए हैं या शहरी क्षेत्र से बहुत दूर हैं, यह परियोजना उच्च गति की इंटरनेट सेवा प्रदान करके समय के उपयोग को कम करती है। विभिन्न सरकारी विभागों ने इस परियोजना में रुचि दिखाई है। जैसे आईटी, शिक्षा, कृषि आदि, क्योंकि यह देश के उज्वल और अधिक ज्ञान से सुसज्जित भविष्य की झलक दिखाता है। भारत सरकार द्वारा संचालित, डिजिटल इंडिया देश को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने के लिए शुरू किया गया एक अभियान है। इस अभियान का मकसद सरकारी सेवाओं को उन्नत करके कागजी कामकाज को कम करना है। डिजिटल भारत के नौ स्तंभ हैं।

1) ब्रॉडबैंड सुविधा

डिजिटल भारत के अन्तर्गत करीब ढाई लाख पंचायतों को इससे जोड़ने का प्लान है। बीस हजार करोड़ की अनुमानित राशि से ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क को देश भर में फैलाने की योजना 2016-2017 में बनाई गयी थी।

2) घर-घर में फोन

भारत में मोबाइल फोन उपयोगकर्ताओं ने 2014 में 500 मिलियन उपयोगकर्ताओं को पार किया और पिछले एक दशक में लगातार वृद्धि हुई है। 2024 में ई-मार्केटर के एक सर्वेक्षण के अनुसार, भारत में 2024 में 1000 मिलियन से अधिक मोबाइल फोन उपयोगकर्ता आंके गये।

3) सार्वजनिक इंटरनेट एक्सेस कार्यक्रम – राष्ट्रीय ग्रामीण इंटरनेट मिशन

इस कार्यक्रम के द्वारा सीएससी को ग्राम-पंचायतों के माध्यम से सेवा वितरण के लिए बहुआयामी अंत-बिंदुओं के माध्यम से सबके अनुकूल बनाया गया है। डीआईटीवाई के माध्यम से तकरीबन 4,750 करोड़ रुपए लागत से करीब 130,000 से 250,000 गांवों तक पहुँचाने का लक्ष्य है। साथ ही डाक-घरों को भी बहु-सेवा केंद्र बनाया जाना है।

4) ई-गवर्नेंस: प्रौद्योगिकी के माध्यम से सुधार

सरकार सरलीकरण और कटौती, ऑनलाइन अनुप्रयोगों, विभागों के बीच विकासशील इंटरफ़ेस, स्कूल प्रमाणपत्र और मतदाता पहचान पत्र, सेवाओं और प्लेटफार्मों के एकीकरण जैसे ऑनलाइन संग्रह का उपयोग सहित लेनदेन में सुधार करने के लिए आईटी का उपयोग करके बिजनेस प्रोसेस री-इंजीनियरिंग (बीपीआर) करेगी। जैसे पेमेंट गेटवे, मोबाइल प्लेटफॉर्म आदि।

5) ई-क्रांति: इलेक्ट्रॉनिक डिलीवरी ऑफ़ सर्विसेज

इसमें नियोजन, कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, वित्तीय समावेशन, न्याय और सुरक्षा के क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देना शामिल होगा। कृषि के क्षेत्र में, किसानों के लिए प्रौद्योगिकी का विकास वास्तविक समय की जानकारी, इनपुट के ऑनलाइन ऑर्डर (जैसे उर्वरक) और ऑनलाइन नकदी, ऋण, राहत-भुगतान के साथ-साथ मोबाइल बैंकिंग के विकास में परिणत होगा।

6) सभी के लिए सूचना

'सभी को जानकारी' का स्तंभ का उद्देश्य ऑनलाइन जानकारी प्रदान करना और वेबसाइटों और दस्तावेजों की मेजबानी करना शामिल होगा। यह सामान्य रूप से खुले डेटा प्लेटफार्मों के विकास के साथ-साथ जनता द्वारा सूचना के लिए एक आसान और खुली पहुंच के रूप में होगा।

7) इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण: 2025 तक नेट शून्य आयात लक्ष्य

भारत में, इलेक्ट्रॉनिक विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए मौजूदा संरचना को मजबूत करने की आवश्यकता है; आने वाले दिनों में इस डोमेन में 'नेट शून्य आयात' का लक्ष्य रखा गया है। यह एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य होगा, जिसमें कराधान, प्रोत्साहन, पैमाने की अर्थव्यवस्था जैसे कई मोर्चों पर समन्वित कार्रवाई की आवश्यकता होगी और लागत के नुकसान को खत्म करना होगा।

8) आईटी नौकरियां

इस स्तंभ का उद्देश्य आईटी सेक्टर की नौकरियों के लिए छोटे शहरों और गांवों में लोगों को प्रशिक्षित करना है।

9) प्रारंभिक फसल कार्यक्रम

इसके तहत ग्रामीण अंचल में बहुत सारी योजनाएं कार्यान्वित हो रही हैं। इंटरनेट के माध्यम से ग्रामीण स्तर पर आधारभूत सुविधाएं मुहैय्या कराने की योजना है। शीघ्र कटाई कार्यक्रम में सरकारी मंच के द्वारा शुभकामनाएं भेजना, केन्द्र सरकार के सभी कार्यालयों के कर्मचारियों को बायोमैट्रिक उपस्थिति कराना अनिवार्य किया गया है।

डिजिटलीकरण के कारण अब घर बैठे हम रेल, वायुयान, बस के टिकट्स बुक कर सकते हैं। अब लंबी-लंबी कतारों में खड़े होने की जरुरत नहीं। अब हर काम ऑनलाइन संभव है। कोई भी जानकारी चाहिए, सब कुछ इंटरनेट पर मौजूद है। समय नहीं है, और खरीदारी करनी है, कोई दिक्कत नहीं, घर बैठे, ऑनलाइन खरीदारी करिए। ई-कामर्स मंचों ने बहुतों को रोजी-रोटी का साधन दिया है।

डिजिटल भारत की समस्या

भारत में ई-गवर्नेंस के सफर में जन-आधारित सेवाओं पर जोर देने के साथ व्यापक क्षेत्रीय प्रयोगों के लिए नब्बे के दशक में कई उतार-चढ़ाव देखे। बाद में, कई राज्यों / केंद्र शासित प्रदेशों ने विभिन्न ई-गवर्नेंस परियोजनाएं चलाईं। हालांकि ये ई-गवर्नेंस जन-आधारित परियोजनाएं थी, लेकिन ये उतने प्रभावी नहीं हुए, जितना होना चाहिए था। देश भर में कई ई-गवर्नेंस परियोजनाओं के सफल कार्यान्वयन के बाद भी ई-गवर्नेंस वो सफलता नहीं दे पाई, जो अपेक्षित थी।

यह महसूस किया गया है कि देश में ई-शासन को सुनिश्चित करने के लिए बहुत अधिक जोर की आवश्यकता है, जो इलेक्ट्रॉनिक सेवाओं, उत्पादों, उपकरणों और नौकरी के अवसरों को शामिल करने वाले समावेशी विकास को बढ़ावा देता है। इसके अलावा, देश में इलेक्ट्रॉनिक विनिर्माण को मजबूत करने की आवश्यकता है।

''हिंदी का विकास राष्ट्र के विकास के साथ जुड़ा हुआ है।''

– अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

''हिंदी भारत की एकता और संस्कृति की पहचान है।''

– माखनलाल चतुर्वेदी

मिलेट्स

ए. सतीश कुमार
तकनीकी अधिकारी – बी

2023 को भारत के खाद्य और कृषि संगठन (FAO) के प्रस्ताव के स्वीकृति के बाद अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष के रूप में मनाया गया। पिछले छह दशकों में, मिलेट्स के क्षेत्र में कमी आई है, जबकि 1960 के दशक में हरित क्रांति हुई थी; हालाँकि, उच्च उपज वाली किस्मों और बेहतर तकनीकों की मदद से उत्पादकता बढ़ती हुई प्रतीत होती है।

राष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष- 2018

भारत सरकार ने पोषण से भरपूर मिलेट्स के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए 2018 को राष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष के रूप में स्वीकृत किया है। मिलेट्स के वर्ष का अवलोकन देश में मिलेट्स के उत्पादन और उपभोग को बढ़ावा देने में मदद करेगा। मिलेट्स के बढ़ते उत्पादन से भूख के खिलाफ लड़ाई में मदद मिलेगी और लंबे समय में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम किया जा सकेगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अनुसार, भारत को पोषणयुक्त आहार और अच्छे स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने के लिए मिलेट्स क्रांति पर काम करने की आवश्यकता है। इसलिए, इस लेख का उद्देश्य भारत में मिलेट्स पर विस्तृत जानकारी प्रदान करना है। उम्मीदवार मिलेट्स की पृष्ठभूमि, भारत में मिलेट्स के प्रकार, मिलेट्स के उत्पादन का समर्थन करने वाली सरकारी योजनाओं और लाभों के बारे में जानेंगे।

मिलेट्स की पृष्ठभूमि :

मिलेट्स सबसे पुराने खाद्य पदार्थों में से एक है, ये छोटे बीज वाले कठोर फसलें हैं जो सूखे क्षेत्रों या वर्षा-निर्भर क्षेत्रों में मिट्टी की उर्वरता और नमी की सीमित स्थितियों में अच्छी तरह से उग सकती हैं। मिलेट्स को निम्न उर्वर भूमि, जनजातीय और वर्षा-निर्भर तथा पहाड़ी क्षेत्रों में उगाया जाता है। इन क्षेत्रों में हरियाणा, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु और तेलंगाना शामिल हैं।

अपनी छोटी वृद्धि अवधि के कारण, मिलेट्स बीज से लेकर कटाई के लिए तैयार फसलों में केवल लगभग 65 दिनों में विकसित हो सकते हैं। मिलेट्स की यह अत्यधिक लाभकारी विशेषता दुनिया के घनी आबादी वाले क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है। यदि सही तरीके से संग्रहीत किया जाए, तो मिलेट्स दो साल या उससे अधिक समय तक अच्छे रह सकते हैं।

मिलेट्स न केवल गर्म जलवायु या मिट्टी की स्थितियों में उग सकते हैं और पोषणयुक्त अनाज और चारा प्रदान कर सकते हैं, बल्कि ये अपनी छोटी वृद्धि अवधि के कारण सिंचाई और सूखे की खेती के तहत कई फसल प्रणाली में भी अच्छी तरह से फिट हो सकते हैं।

साधारण परिस्थितियों में मिलेट्स की लंबी और आसान भंडारण क्षमता ने उन्हें अकाल भंडार का दर्जा दिया है और यह विशेषता भारत के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि हमारे देश की कृषि मानसून में अप्रत्याशित परिवर्तनों से प्रभावित होती है।

भारत में मिलेट्स के प्रकार:

भारत में आमतौर पर उगाए जानेवाले मिलेट्स में ज्वार (सोरघम), बाजरा (मोती मिलेट), रागी (फिंगर मिलेट), झंगोरा (बर्नयार्ड मिलेट), बारी (प्रोसो या सामान्य मिलेट), कंगनी (फॉक्सटेल /इतालवी मिलेट), कोदरा (कोडो मिलेट) आदि शामिल हैं। आइए हम इनके बारे में विस्तार से पढ़ते हैं और उनके क्षेत्रीय नाम भी जानते हैं।

1. बर्नयार्ड मिलेट आयरन और फाइबर का उच्च स्रोत है। इसे तमिल में kuthiravali, कन्नड़ में Oodhalu, तेलुगु में Odalu, मलयालम में Kavadapullu और हिंदी में Sanwa कहा जाता है।

2. फिंगर मिलेट एक ऐसा अनाज है जो ओट्स और अनाज का बहुत अच्छा विकल्प है। इसे कन्नड़ में रागी, तेलुगु में रागुलु, तमिल में केलवरागु, मलयालम में कुवरागु और हिंदी में मुंडुआ कहा जाता है।

3. फॉक्सटेल मिलेट खनिजों और विटामिनों से भरपूर है। इसे तमिल में Thinai, तेलुगु में Kirra, मलयालम में Thinna, कन्नड़ में Navane और हिंदी में कंगनी कहा जाता है।

4. लिटिल मिलेट भी आयरन और फाइबर से भरा होता है, इसके क्षेत्रीय नाम मलयालम में चामा, कन्नड़ में समे, तमिल में समाई, तेलुगु में समा और हिंदी में कुटकी हैं।

5. प्रोसो मिलेट हिंदी में बारी, तमिल और मलयालम में पनिवारागु, कन्नड़ में बारागु और तेलुगु में वरिगालु के नाम से जाना जाता है।

6. मोती मिलेट प्रोटीन का उच्च स्रोत है, इसे हिंदी में बाजरा, कन्नड़ में सज्जे, तेलुगु में सज्जालु, तमिल में कंबु और मलयालम में कंबम कहा जाता है।

बाजरा का महत्व:

कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय के अनुसार, 2016-2017 में, बाजरा की खेती के तहत क्षेत्र में 60% की कमी आई(14.72 मिलियन हेक्टेयर तक) जो उपभोग के पैटर्न में बदलाव, गेहूं और चावल की खेती के लिए सिंचित क्षेत्र का रूपांतरण, बाजरा की अनुपलब्धता, कम उपज, आहार की आदतें और कम मांग के कारण हुआ। इसके परिणामस्वरूप महिलाओं और बच्चों में विटामिन-ए, प्रोटीन, आयरन और आयोडीन जैसे पोषक तत्वों का स्तर गिर गया, जिससे कुपोषण हुआ।

वैश्विक भूख सूचकांक (GHI) के संबंध में, भारत 81 देशों में 64वें स्थान पर है। यह बच्चों के कुपोषण में दूसरे स्थान पर है, जो हमारे देश की खराब स्थिति को उजागर करता है। यह स्थिति तब भी बनी हुई है जब सार्वजनिक वितरण प्रणाली और लक्षित पीडीएस लगभग पांच दशकों से काम कर रही है। इसका कारण यह है कि ध्यान केवल गेहूं और चावल के वितरण पर केंद्रित रहा है जबकि बाजरे को लंबे समय से नजरअंदाज किया गया है।

खाद्य फसलों में, बाजरा भारतीय कृषि में अपेक्षाकृत निम्न स्थान पर है, हालांकि यह क्षेत्रीय और घरेलू स्तर पर खाद्य सुरक्षा के दृष्टिकोण से वास्तव में महत्वपूर्ण है। इसे ध्यान में रखते हुए, नीचे दिए गए बिंदु बाजरे के महत्व को उजागर करते हैं।

1. अधिकांश बाजरे अम्ल-निर्माण करने वाले, गैर-चिपचिपे, अत्यधिक पौष्टिक और आसानी से पचने वाले खाद्य पदार्थ हैं। कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स (GI) के कारण, यह ग्लूटेन-मुक्त है, जो लंबे समय तक ग्लूकोज के धीमे रिलीज में मदद करता है, जिससे मधुमेह का जोखिम कम होता है। इसीलिए एक रोग से पीड़ित व्यक्ति आसानी से अपने आहार में विभिन्न बाजरे शामिल कर सकते हैं।

2. बाजरा कैल्शियम, आयरन, जिंक, फास्फोरस, मैग्नीशियम और पोटैशियम जैसे खनिजों का समृद्ध स्रोत है। इसमें आहार फाइबर और फोलिक एसिड, विटामिन B6, β- कैरोटीन और नियासिन जैसे विटामिनों की भी पर्याप्त मात्रा होती है। उच्च मात्रा में लेसिथिन की उपलब्धता तंत्रिका तंत्र को मजबूत करने के लिए उपयोगी होती है। इसलिए, नियमित रूप से बाजरे का सेवन कुपोषण को दूर करने में मदद कर सकता है।

3. हालांकि बाजरे मेंटैनिन, फाइटोस्टेरोल, पॉलीफेनोल और एंटी ऑक्सीडेंट जैसे फाइटो कैमिकल्स की प्रचुरता होती है, लेकिन इनमें कुछ एंटी-न्यूट्रिशनल कारक भी होते हैं जिन्हें कुछ प्रसंस्करण उपचारों के माध्यम से कम किया जा सकता है।

4. बाजरे में अनुकूलन की व्यापक क्षमता है क्योंकि वे आंध्र प्रदेश के तटीय क्षेत्रों से लेकर उत्तर-पूर्वी राज्यों के मध्यम ऊंचाई वाले क्षेत्रों और उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों तक उग सकते हैं। बाजरा नमी, तापमान और मिट्टी के प्रकार में भिन्नताओं को सहन कर सकता है, जो भारी से लेकर रेतीले बंजर भूमि तक हो सकता है।

इसलिए, हमारे देश के लिए खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए, इन फसलों के उत्पादन को बढ़ाना और उत्पादन, वितरण और उपभोग का नियंत्रण लोगों को वापस लौटाना महत्वपूर्ण है।

बाजरा उत्पादन बढ़ाने के लिए सरकारी उपाय:

कई गुणों के बावजूद, बाजरे का खाद्य के रूप में उपयोग पारंपरिक उपभोक्ताओं, यानी जनजातीय जनसंख्या तक सीमित है। इसका मुख्य कारण उपभोक्ता-अनुकूल तैयार खाने योग्य बाजरा आधारित उत्पादों की अनुपलब्धता है।

हाल ही में, बाजरे ने ध्यान आकर्षित किया है और उनके सुविधाजनक और मूल्य-वर्धित प्रसंस्कृत उत्पादों को प्राप्त करने के लिए प्रयास जारी हैं। चूंकि कई घरों में सूखी भूमि और पहाड़ी क्षेत्रों में अपने खाद्य जरूरतों को पूरा करने के लिए बाजरे पर निर्भरता है, अब खाद्य बास्केट को बढ़ाने और सार्वजनिक वितरण प्रणाली में ज्वार, बाजरा, रागी आदि जैसे बाजरे को शामिल करने का प्रस्ताव किया गया है।

सरकार ने खाद्य श्रृंखला में बाजरे की भूमिका को मान्यता दी है। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (NFSM) के तहत खाद्य अनाज के उत्पादन को बढ़ाने के लिए प्रारंभिक लक्ष्यों में से एक है।

उत्पादन में अतिरिक्त 25 मिलियन टन, जो बाजरा के लिए आवंटित हिस्सा 2 मिलियन टन है, अर्थात बढ़ी हुई खाद्यान्न उत्पादन का 8%।

भारतीय नीति निर्माताओं ने बाजरा खेती प्रणालियों की ओर अपना ध्यान पुनः केंद्रित किया और किसानों के लिए एक सक्षम वातावरण बनाने के लिए नीतियाँ लागू कीं। बाजरा उत्पादन के संदर्भ में, भारत सरकार द्वारा कुछ मौजूदा योजनाएँ निम्नलिखित हैं:

1. कोर्स अनाजों के लिए एकीकृत अनाज विकास कार्यक्रम (ICDP-CC) – कृषि के मैक्रो प्रबंधन के तहत फसल प्रणाली क्षेत्रों में।

2. गहन बाजरा प्रचार के माध्यम से पोषण सुरक्षा के लिए पहल- INSIMP, जो "राष्ट्रीय कृषि विकास योजना" (RKVY) का एक भाग है, जो बाजरा उत्पादन का समर्थन करने के लिए एकमात्र समग्र पहल है।

3. बारिश पर निर्भर क्षेत्र विकास कार्यक्रम- RADP: राष्ट्रीय कृषि विकास योजना- RKVY का एक घटक।

बाजरा उत्पादन के लाभ :

बाजरा को अक्सर मोटा अनाज कहा गया है, हालाँकि, उनके पोषण संबंधी योगदान के कारण अब इन्हें 'न्यूट्रिया-बाजरा या न्यूट्रिया- अनाज कहा जा रहा है।

भारत में बाजरा उत्पादन के कुछ लाभ निम्नलिखित हैं:

1. बाजरा को 'चमत्कारी अनाज' या 'भविष्य की फसलें' कहा जाता है क्योंकि ये न केवल कठोर परिस्थितियों में उग सकते हैं बल्कि ये सूखा-प्रतिरोधी फसलें हैं जिन्हें कम बाहरी इनपुट की आवश्यकता होती है।

2. बाजरा द्वि-उद्देशीय फसलें हैं। इसे खाद्य और चारा दोनों के रूप में उगाया जाता है, जिससे लाखों परिवारों को खाद्य/ जीविका सुरक्षा मिलती है और कृषि की आर्थिक दक्षता में योगदान होता है।

3. बाजरा जलवायु परिवर्तन को कम करने में मदद करता है क्योंकि यह वायुमंडलीय कार्बन दबाव CO_2 को कम करने में मदद करता है। इसके विपरीत, गेहूं एक तापीय संवेदनशील फसल है और धान मीथेन उत्सर्जन के माध्यम से जलवायु परिवर्तन में एक प्रमुख योगदान कर्ता है।

4.बाजरा उत्पादन रासायनिक उर्वरकों के उपयोग पर निर्भर नहीं करता है। बाजरा की फसलें कीटों को आकर्षित नहीं करती हैं और भंडारण से प्रभावित नहीं होती हैं।

5. बाजरा अपने पोषण मूल्य में अद्वितीय है, चाहे वह विटामिन, खनिज, आहार फाइबर या अन्य पोषक तत्व हों। यह पोषण में गेहूं और चावल से लगभग 3 से 5 गुना बेहतर है। ज्वार (ज्वार) पॉलीफेनोल्स, एंटी ऑक्सीडेंट्स और कोलेस्ट्रॉल – घटाने वाले मोमों का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

6. बाजरा मोटापे को नियंत्रित करने में मदद करता है, उच्च रक्तचाप, हृदयरोग, टाइप 2 मधुमेह, कैंसर के जोखिम को कम करता है और उच्च आहार फाइबर सामग्री के कारण कब्ज को रोकने में मदद करता है, जो कि कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स के साथ होता है।

विशेष पोषण लाभ:

- **ग्लूटेनमुक्त**: सीलिएक रोग और ग्लूटेन संवेदनशीलता वाले लोगों के लिए सुरक्षित विकल्प

- **कम ग्लाइसेमिकइंडेक्स**: रक्त शर्करा के स्तर को धीरे-धीरे बढ़ाता है, मधुमेह रोगियों के लिए अनुकूल है।
- **प्रीबायोटिक गुण**: आंतों के स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है और प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करता है।
- **एंटी-इंफ्लेमेटरीगुण**: शरीर में सूजन को कम करता है और पुरानी बीमारियों से बचाता है।

मिलेट्स का पोषण मूल्य : मिलेट्स अपने उच्च पोषण मूल्य के लिए जाने जाते हैं। आधुनिक पोषण विज्ञान भी इन्हें 'सुपरफूड' की श्रेणी में रखता है। यहां एक विस्तृत नज़र डालते हैं कि इन अनाजों में क्या-क्या पोषक तत्व पाए जाते हैं:

पोषक तत्व	**मात्रा (प्रति 100 ग्राम)**	**तुलना (गेहूं/ चावल से)**
प्रोटीन	7-12%	1.5-2 गुना अधिक
कार्बोहाइड्रेट	60-70%	समान परंतु कम ग्लाइसेमिकइंडेक्स
आहारीय फाइबर	15-20%	2-3 गुना अधिक
वसा	1.5-5%	उच्च पॉली अनसेचुरेटेड फैटी एसिड
खनिज	–	–
लोहा	2-10 मिलीग्राम	2-5 गुना अधिक
कैल्शियम	20-350 मिलीग्राम	रागी में सबसे अधिक (गाय के दूध से 3 गुना)
जिंक	1.5-3 मिलीग्राम	1.5 गुना अधिक
मैग्नीशियम	90-150 मिलीग्राम	2 गुना अधिक
फास्फोरस	160-250 मिलीग्राम	समान
विटामिन	–	–
बी कॉम्प्लेक्स	उच्च मात्रा	फोलेट और थायमिन प्रचुर मात्रा में
विटामिन ई	0.3-0.8 मिलीग्राम	2-3 गुना अधिक
एंटी ऑक्सीडेंट्स	उच्च मात्रा	फेनॉलिक यौगिक, फ्लेवोनोइड प्रचुर
फाइटो केमिकल्स	विविध प्रकार	सेहत के लिए लाभदायक

राष्ट्रीय भ्रष्टाचार महोत्सव

निशांत मनिष
तकनीशियन-बी

पिछले दिनों राष्ट्रीय भ्रष्टाचार महोत्सव मनाया गया,
सभी भ्रष्ट संस्थाओं को बुलाया गया।
भेजी गई सभी को पत्रावली, साथ में प्रतियोगिता की नियमावली।
लिखा था-प्रिय भ्रष्टोदय!
आप तो जानते हैं भ्रष्टाचार हमारे देश की पावन, पवित्र, सांस्कृतिक विरासत है,
हमारी जीवन-पद्धति, हमारी मजबूरी, हमारी आदत है।
विभागीय भ्रष्टाचार का सर्वोत्कृष्ट नमूना दिखाइए,
और उपाधियां तथा पदक-पुरस्कार पाइए।

भ्रष्ट शिरोमणि, भ्रष्ट भूषण,
भ्रष्ट विभूषण और भ्रष्ट रत्न,
और यदि सफल हुए तो आपके विभागीय प्रयत्न।
तो कोई भी पदक जैसे-
स्वर्ण गिद्ध, रजत बगुला या कांस्य कौआ दिया जाएगा,
सांत्वना-पत्र और मदिरा स्वरूप उपहार दिया जाएगा।
न्यूनतम योग्यता के साथ प्रविष्टियाँ भरिए,
या प्रदर्शन अथवा प्रतियोगिता खंड में स्थान चुनिए।
तो कुछ तुले कुछ अनतुले भ्रष्टाचारी, कुछ कुख्यात अधिकारी बुलाए गए,
जूरी के सदस्य बनाए गए, मोटी रकम देकर बुलाए गए।

मुर्ग तंदूरी, मदिरा अंगूरी और विलास की सारी चीजें जरूरी जुटाई गईं,
और निर्णायक मण्डल यानि कि जूरी को दिलाईं गईं।
मुर्गे की टाँग चबाते हुए, और उंगली में चाबी का छल्ला घुमाते हुए
जूरी का एक सदस्य बोला –
मिस्टर भोला-यू नो

हम ऐसे करेंगे, या जी चाहे जैसे करेंगे,

बट बाय द वे भ्रष्टाचार नापने का पैमाना क्या है हम फैसला कैसे करेंगे

मिस्टर भोला ने सिर हिलाया और हाथों को घूरते हुए फरमाया-

चाबी के छल्लों को पैंट में रखिए,

और मुर्गे की टांग को प्लेट में रखिए।

फिर सुनिए मिसयेर मुरारका,

भ्रष्टाचार होता चार प्रकार का।

पहला – नजराना!

यानि नजर करना, लुभाना!

ये काम होने से पहले दिये जाने वाला ऑफर है।

और पूरी तरह से देने वालों की श्रद्धा और इच्छा पर निर्भर है।

दूसरा-शुकराना!

इसके बारे में क्या बताना।

ये काम होने के बाद बतौर शुक्रिया दिया जाता है।

इसमें लेने वालों को आकस्मिक प्राप्ति के कारण बड़ा मजा आता है ।

तीसरा –हकराना!

यानि हक जाताना!

हक बनता है जनाब, बंधा-बँधाया हिसाब।

आपसी सेटलमेंट, कहीं दस परसेंट,

कहीं बीस परसेंट, लेकिन पेमेंट से पहले पेमेंट।

चौथा-जबराना!

यानि जबरदस्ती पाना!

ये देनेवालों की नहीं लेनेवालों की इच्छाशक्ति और क्षमता पर निर्भर करता है।

इसमें मना करनेवाला मरता है।

क्यूंकि लेनेवालों के पास पूरा अधिकार है,

दुत्कार है, फुफकार है, फटकार है।

न चीत्कार, न हाहाकार, केवल मौन स्वीकार होता है।

इसीलिए देनेवाला अकेले में रोता है।

तो यही भ्रष्टाचार का सर्वोत्कृष्ट प्रकार है,

जो भ्रष्टाचारी इसे न कर पाए उसे धिक्कार है।

नजराना का एक, शुकराना के दो, हकराना के तीन और जबराना के पॉइंट चार,

हम भ्रष्टाचार को नंबर देंगे इस प्रकार।

रात्रि का समय

जब बारह पर आ गई सुई,

तो प्रतियोगिता शुरू हुई।

सर्वप्रथम जंगल विभाग आया,

जंगल अधिकारी ने बताया।

इस प्रतियोगिता के सारे फर्नीचर के लिए चार हजार चार सौ बीस पेड़ कटवाए जा चुके हैं।

और एक – एक सोफा सेट जूरी के हर सदस्य के घर भिजवाए जा चुके हैं।

हमारी ओर से भ्रष्टाचार का यही नमूना है,

आपलोग सुबह जब जंगल जाएंगे तो स्वयं देखेंगे की जंगल का एक बड़ा हिस्सा सूना है।

अगला प्रतियोगी पीडबल्यूडी का

उसने बताया अपना तरीका, हम लैंड फिलिंग करते हैं।

जमीन के निचले हिस्से को ऊंचा करने के लिए मिट्टी भरते हैं।

हर बरसात में मिट्टी बह जाती है।

जिस टीले से मिट्टी लाते हैं,

या कागजों पर लाया जाना दिखाते हैं,

यदि सचमुच उतनी मिट्टी डलवाया होता,

यहाँ से अमेरिका तक का आर पार गड्ढा पाया होता।

लेकिन टीला ज्यों का त्यों खड़ा है।

उतना हीं ऊंचा उतना ही बड़ा है।

मिट्टी डली भी और नहीं भी,

ऐसा नमूना नहीं देखा होगा कहीं भी।

अचानक अंदर घुस आया एक अध्यापक----

चुप रहो। चार ट्यूशन क्या कर लिए खुद को भ्रष्टाचारी समझने लगे,
प्रतियोगिता में शरीक होने का दम भरने लगे।
तुम क्वालिफाइ ही नहीं करते बाहर जाओ,
नैक्स्ट, अगले को बुलाओ।

अब आया एक पुलिस का दरोगा और बोला –

तो भ्रष्टाचार कहाँ होगा?
जिसे चाहे पकड़ लेते हैं, जिसे चाहे रगड़ देते हैं।
जूते नहीं खाने तो हजार ला, हथकड़ी नहीं डलवानी तो दो हजार ला।
पकड़वाने के पैसे, छुड़वाने के पैसे, ऐसे भी पैसे, बिना पैसे हम हिलें कैसे?
जमानत, तफ़्तीश, इन्वेस्टिगेशन, इंक्वायरी, तलाशी या एनी सिचुएशन,
अपनी तो चाँदी है, क्यूंकि हर स्थिति अपनी बाँदी है।
डंडे का ज़ोर है, क्यूंकि डंडा कठोर है।
अपराधों की फसल की देखभाल करते हैं,
वर्दी और डंडे से कमाल करते हैं।

फिर आए क्रमशः

एक्साइज़ वाले, स्लम वाले, कस्टम वाले, रेल वाले, खेत वाले, हेल्थ वाले, वेल्थ वाले,
पुरातत्व वाले, स्थापत्य वाले, खाद्य वाले, ट्रांसपोर्ट वाले, एयरपोर्ट वाले,
सभी ने बताए अपने –अपने घोटाले।
प्रतियोगिता पूरी हुई एक सदस्य ने बोला - देखो भाई
स्वर्ण गिद्ध तो पुलिस विभाग को जा रहा है, हाँ रजत बगुले के लिए पीडबल्यूडी सामने आ रहा है ।
ऐसा लगता है हमको कि कांस्य कौआ मिलेगा एक्साइज़ या कस्टम को।
विरत भ्रष्ट नेताजी ने मेघमंद्र स्वर में उच्चारा –
मेरे हजारों मुंह, हजारों हाथ हैं, हजारों पेट, हजारों लात हैं।

ये सब भ्रष्टाचारी मेरे ही रूप हैं, मैं एक हूं लेकिन मेरे करोड़ों रूप हैं।
भ्रष्टाचारी मजिस्ट्रेट, रिश्वतखोर थानेदार, इंजीनियर, ओवरसियर, रिश्तेदार, नातेदार

मुझसे ही पैदा हुए, मुझमें ही समायेंगे, पुरस्कार ये सारे मेरे हैं, मेरे पास ही आएंगे।
अचानक स्वर्ण गिद्ध, रजत बगुला, कांस्य कौआ अपने – अपने पंख फड़फड़ाने लगे,
नेता जी पर फूल बरसाने लगे।
जूरी के मेम्ब्रान पर भी प्रसन्नता छाई, उन्होंने मिलकर नेताजी की आरती गाई

अनेक रैली, अनेक थैली,
अनेक ठाठम च बाटम अनेक।
अनेक दारा, अनेक मदिरा,
अनेक कुर्सी च खाट्म अनेक ।
अनेक बंगले, अनेक कोठी,
अनेक फार्मम च प्लाटम अनेक ।
अनेक डंडम अनेक गुंडम,
अनेक लुटम च पाटम अनेक ।
अनेक बदलम दलम अनेक,
अनेक चमचे, अनेक गुर्गे,
अनेक सीढ़ी च घाटम अनेक।
अनेक जिह्वा, अनेक जेबम,
अनेक मारम च काटम अनेक।
ओम प्रचंडरूपा डंडानी नमों नमः।
सर्वव्यापी गुंडानी नमों नमः।
सर्वोपरि हथकंडानी नमों नमः।
ओम भ्रष्टमिदम, भ्रष्टमदम, भ्रष्टात भ्रष्टमुद्च्यते।
भ्रष्टस्य भ्रष्टमादय, भ्रष्ट्मेवावशिष्यते।।
ओम भ्रष्टम भ्रष्टम भ्रांति।।।

सामान्य पौधे से सबसे गंभीर बीमारियों के इलाज

जितेन दास
वैज्ञानिक-एफ

पौधे मानवता की सबसे गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए दवाओं का एक प्रचुर स्रोत हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार आज, पौधे दुनिया की कुछ सबसे घातक बीमारियों जैसे डायरिया रोग, कैंसर और मधुमेह श्वसन संक्रमण अल्जाइमर रोग हृदय रोग, स्ट्रोक, क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (COPD) और अन्य मनोभ्रंश हैं को ठीक करने में मदद कर रहे हैं। उनमें से लगभग सभी के लिए ऐसे उपचार उपलब्ध हैं जो पौधे मूल रूप से प्रकृति से प्राप्त किए गए थे। एटर हाईसोप, बकोपा मोनिएरी, एक उष्णकटिबंधीय जलीय पौधा है जिसका उपयोग भारत और चीन में मस्तिष्क के कार्य को समर्थन देने के लिए सदियों से किया जाता रहा है। एटर हाईसोप, बकोपा मोनिएरी पौधे में औषधीय गुण होते हैं जो पार्किंसंस रोग के रोगियों की सहायता कर सकती हैं।

तम्बाकू के धूम्रपान से हर साल आठ मिलियन से अधिक लोगों की मौत हो जाती है। विरोधाभासी रूप से, तम्बाकू में एक प्रोटीन होता है जो रक्त को पतला करता है, जिससे स्ट्रोक और हृदय रोग से लड़ने में मदद मिलती है, और इसका इस्तेमाल लाखों लोगों की जान बचाने के लिए किया जा सकता है।

मॉर्फिन, अफ़ीम पोस्त का एक अर्क है जिसे आज प्रयोगशालाओं में संश्लेषित किया जाता है। मॉर्फिन एक तेज़ दर्द निवारक दवा जो आमतौर पर सर्जरी के बाद या टूटी हड्डियों के लिए दी जाती है। हेरोइन, अफ़ीम पोस्त का एक अन्य व्युत्पन्न, इसके शक्तिशाली नशे के गुणों को पहचाने जाने से पहले पहली बार चिकित्सा उपयोग के लिए संश्लेषित किया गया था। हर साल यह अत्यधिक खुराक के कारण होने वाली हजारों मौतों के लिए जिम्मेदार है। कोडीन एक मध्यम-शक्ति वाली दर्द निवारक दवा है जो अफ़ीम पॉपीज़ से भी प्राप्त होती है और कुनैन उष्णकटिबंधीय सिनकोना पेड़ की छाल से प्राप्त एक कड़वा यौगिक है जिसका उपयोग मलेरिया के इलाज के लिए किया जाता है। अफ़ीम की तरह, बीमारियों के इलाज के लिए हम जिन पौधों का उपयोग करते हैं उनमें से कई जहरीले होते हैं और इन्हें सावधानीपूर्वक मापी गई गैर-घातक खुराक में लिया जाना चाहिए। हर साल यह अत्यधिक खुराक के कारण होने वाली हजारों मौतों के लिए जिम्मेदार है।

आज, विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा 'बुनियादी' और 'आवश्यक' मानी जाने वाली लगभग 11% दवाएं फूल वाले पौधों से उत्पन्न हुई हैं और उनमें से कई बिना फूल वाले पौधों से हैं। दशकों के शोध के लिए धन्यवाद, हम सुपरहीरो पौधों की जीवनरक्षक शक्तियों का उपयोग करने में सक्षम हैं जिनके रासायनिक यौगिक शक्तिशाली दवाओं का आधार बनते हैं जो कैंसर, पार्किंसंस रोग और मलेरिया से निपटने में मदद कर सकते हैं।

कई सामान्य पौधे से मानवता की सबसे गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए दवाएं

एलोवेरा: त्वचा के स्वास्थ्य, जलन और घावों के लिए उपयोग किया जाता है। एलोवेरा का उपयोग हजारों वर्षों से जली हुई त्वचा और जलन वाली त्वचा को शांत करने के लिए किया जाता रहा है।

अदरक: अदरक पाचन को बढ़ावा दे सकता है और इसमें सूजन रोधी और एंटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं।

मतली, मोशन सिकनेस और सूजन को कम करने के लिए जाना जाता है।

अश्वगंधा: एक जड़ी बूटी जिसका उपयोग अक्सर मस्तिष्क स्वास्थ्य और याददाश्त के लिए किया जाता है।

हल्दी: मसाला जो भारतीय करी को अपना विशिष्ट पीला रंग देता है, लंबे समय से आयुर्वेदिक और पारंपरिक चीनी चिकित्सा में पाचन और यकृत के कार्य में सहायता, गठिया के दर्द से राहत और मासिक धर्म को विनियमित करने के लिए उपयोग किया जाता है। इसमें सक्रिय यौगिक होते हैं जो मज़बूत एंटीऑक्सीडेंट और सूजन-रोधी होते हैं।

केसर (क्रोकस सैटिवस): इसके एंटीऑक्सीडेंट और कामोत्तेजक गुणों के लिए उपयोग किया जाता है।

पवित्र तुलसी: पारंपरिक रूप से अपच, हृदय स्वास्थ्य और श्वसन संबंधी समस्याओं के लिए उपयोग की जाती है। पारंपरिक चिकित्सा में इसका उपयोग विभिन्न प्रयोजनों के लिए किया जाता है; तुलसी कई रूपों में ली जाती है: हर्बल चाय के रूप में, सूखे पाउडर के रूप में, ताज़ी पत्ती के रूप में या घी के साथ मिलाकर। कर्पूर तुलसी से निकाले गए आवश्यक तेल का उपयोग मुख्यतः औषधीय प्रयोजनों और हर्बल सौंदर्य प्रसाधनों में किया जाता है।

पेपरमिंट: इसका तेल, पानी पुदीना और स्पीयरमिंट के बीच एक क्रॉस से, विभिन्न स्थितियों के लिए कथित उपयोग का इतिहास है, जिसमें मतली, अपच और सामान्य सर्दी के लक्षण शामिल हैं।

चमेली: इसे या तो एंटीसेप्टिक या विरोधी भड़काऊ एजेंट के रूप में माना जाता है। इसका उपयोग इतिहास में विभिन्न स्थितियों के लिए किया गया है, जिसमें अनिद्रा और चिंता शामिल है।

अलसी के बीज (flaxseed): इसका उपयोग आमतौर पर रेचक के रूप में किया जाता है। अलसी के तेल का उपयोग गठिया सहित विभिन्न स्थितियों के लिए किया जाता है।

नीलगिरी के पत्ते (eucalyptus): इसका व्यापक रूप से पारंपरिक चिकित्सा में ज्वरनाशक के रूप में उपयोग किया जाता था। नीलगिरी के तेल का उपयोग आमतौर पर ओवर-द-काउंटर खांसी और सर्दी की दवाओं के साथ-साथ एक एनाल्जेसिक के रूप में भी किया जाता है।

नींबू: अन्य खट्टे फलों के साथ, चीनी और भारतीय पारंपरिक चिकित्सा में उपयोग का एक लंबा इतिहास है। समकालीन उपयोग में, शहद और नींबू खांसी और गले में खराश के इलाज के लिए आम है।

सिनकोना: लगभग 38 वृक्ष प्रजातियों का एक वंश है जिनकी छाल कुनैन सहित एल्कलॉइड का स्रोत है। ज्वरनाशक के रूप में इसका उपयोग पहली बार 17वीं शताब्दी में पेरू के जेसुइट्स द्वारा लोकप्रिय हुआ था।

पपीता: घावों और पेट की परेशानियों के इलाज के लिए उपयोग किया जाता है।

गांजा, कैनबिस, मारिजुआना, भारतीय गांजा: प्राचीन काल से दुनिया भर में विभिन्न स्थितियों और बीमारियों के इलाज के रूप में उपयोग किया जाता है, जिसमें दर्द, सूजन, गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल समस्याएं जैसे आईबीएस, मांसपेशियों में शिथिलता, चिंता, अल्जाइमर और मनोभ्रंश, एडीएचडी, ऑटिज्म, कैंसर,

सेरेब्रल पाल्सी, आवर्ती सिरदर्द, क्रोहन रोग, अवसाद, मिर्गी, ग्लूकोमा, अनिद्रा और न्यूरोपैथी शामिल हैं।

मैरीगोल्ड: जिसे कैलेंडुला भी कहा जाता है, का घावों के उपचार और त्वचा को आराम पहुंचाने में उपयोग का एक लंबा इतिहास है।

नीम: नीम का उपयोग भारत में कृमि, मलेरिया, गठिया और त्वचा संक्रमण सहित कई अन्य बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता है। इसके कई उपयोगों के कारण नीम को भारत में "गाँव का औषधालय" कहा जाता है।

''मैं दुनियां की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ, पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, ये मैं सह नहीं सकता।''

– आचार्य विनोबा भावे

''हिंदी जनता के संघर्ष और जीवन की भाषा है।''

– नागार्जुन

हार नहीं मानूंगी

प्रियंका प्रियदर्शिनी बेहेरा
वरिष्ठ तकनीकी सहायक-बी

सूरज जैसी रोशनी नहीं सही,
दीपक जैसा जलूंगी,
नदियों जैसा निरतंर प्रयास करूंगी,
लेकिन अंत तक हार नहीं मानूंगी ।।
हौसले को मुट्ठी में रखकर,
निष्काम कर्म करती रहूँगी,
कुछ ज्यादा संघर्ष लगेगा जरूर,
लेकिन अंत तक हार नहीं मानूंगी ।।
लक्ष्य को अपना भगवान मान कर,
अर्जुन की कहानी दोहराऊँगी,
धक्का खा कर गिरूंगी बार-बार,
लेकिन अंत तक हार नहीं मानूंगी ।।
कुछ देर की खामोशी रहेगी जरूर,
समंदर जैसा तूफान फिर से लाऊँगी,
सब्र करने में तकलीफ होगी जरूर,
पर अंत तक हार नहीं मानूंगी ।।
जीत अगर मुमकिन नहीं तो,
रण भूमि में लड़ते लड़ते हारूंगी,
इस अकेले सफर को मंजिल तक पहुँचाऊँगी,
पर अंत तक हार नहीं मानूंगी ।।

जेनरेशन जेड: नई सोच और वर्तमान परिदृश्य

रॉकी कुमार
प्रशासनिक सहायक – ए

परिचय: जेनरेशन जेड, जिसे Gen-Z के नाम से जाना जाता है, वे युवा जिनका जन्म लगभग 1997 से 2012 के बीच हुआ है। ये वह पीढ़ी है जिसने अपनी जिंदगी इंटरनेट, स्मार्टफोन और सोशल मीडिया के साथ बिताई है। इन्हे डिजिटल नेटिव भी कहा जाता है, क्योंकि तकनीक का इस्तेमाल करना इनकी जन्मजात क्षमता है। Gen-Z की पहचान तकनीक, नवाचार और सामाजिक जागरुकता से होती है?

Gen-Z की खासियतें:

Gen-Z में सबसे बड़ी खासियत यह है कि तेजी से बदलती दुनिया के साथ खुद को ढाल लेते हैं। ये लोग न केवल तकनीक के जानकार हैं बल्कि सामाजिक और पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति संवेदनशील भी हैं। इनके लिए मानसिक स्वास्थ्य, लिंग समानता और जलवायु परिवर्तन जैसे विषय बेहद महत्वपूर्ण हैं। Gen-Z की सोच खुली और प्रगतिशील होती है जो उन्हें पुराने तौर-तरीकों से अलग बनाती है। मैं एक Gen-Z युवा हूँ और अपने अनुभव के आधार पर यह कह सकता हूं कि हमारी पीढ़ी तकनीक के साथ-साथ सामाजिक मुद्दों को लेकर भी जागरुक है। मानसिक स्वास्थ्य हमारे लिए बहुत अहम है क्योंकि आज की तेज और तनावपूर्ण जिंदगी में हमारी पीढ़ी मानसिक दबाव का भी सामना करती है। हम इस बारे में खुलकर बात करते हैं और सहायता लेने में विश्वास रखते हैं जिससे मानसिक बीमारियों का स्टिग्मा कम होता है।

ये पीढ़ी सामाजिक बदलाव की दिशा में सक्रिय है। युवाओं के लिए अपने अधिकारों की भी लड़ाई लड़ रहे हैं। Gen-Z कामकाजी क्षेत्र में लचीलेपन, निष्पक्षता और तकनीकी प्रतिस्पर्धा की मांग करते हैं।

युवा पीढ़ी का वर्तमान परिदृश्य:

आज का Gen-Z वैश्विक श्रमशक्ति का लगभग 27-30% हिस्सा बन चुका है। लेकिन साथ ही, यह पीढ़ी बढ़ती मुद्रास्फीति, आर्थिक अनिश्चितता और मानसिक तनाव जैसी चुनौतियों का भी सामना कर रही है। सर्वेक्षणों के मुताबिक, इस पीढ़ी के लगभग आधे युवा अपनी वित्तीय स्थिति को लेकर चिंतित हैं और बेहतर जीवन की उम्मीद रखते हैं। सोशल मीडीया Gen-Z की सोच और आवाज का सबसे बड़ा मंच है। यहाँ वे न केवल मनोरंजन करते हैं, बल्कि सामाजिक मुद्दों पर चर्चा करते हैं और बदलाव की पहल भी करते है। उन्हें सक्रिय राजनीतिक और सामाजिक जागरुकता में हिस्सा लेने के लिए प्रेरित किया जाता है।

नेपाल में Gen-Z आंदोलन:

हाल ही में नेपाल में Gen-Z युवाओं का एक बड़ा आंदोलन हुआ, जो सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर सरकार द्वारा लगा बैन और भ्रष्टाचार के खिलाफ था। लाखों युवा सड़कों पर उतरे। प्रदर्शन तेज होने पर पुलिस ने कड़ी कार्रवाई की, जिसमें कई लोग घायल हुए और लगभग 51 की मौत हुई। इस आंदोलन के चलते प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली को इस्तीफा देना पड़ा और पहली बार महिला सुशीला

कार्की को अंतरिम प्रधानमंत्री बनाया गया। यह आंदोलन यह दिखाता है कि Gen-Z केवल तकनीकी रूप से माहिर नहीं हैं बल्कि देश की राजनीति और सामाजिक न्याय में भी सक्रिय भूमिका निभा रही है। उनकी आवाज भविष्य में समाज के लिए बदलाव की दिशा में मजबूत प्रेरणा है।

निष्कर्ष: Gen-Z अपनी नई सोच, डिजिटल योग्यता और सामाजिक जिम्मेदारी के साथ भविष्य की दिशा तय कर रहा है। यह युवा पीढ़ी चुनौतीपूर्ण समय में भी अपने अधिकारों के लिए लड़ती है। कार्यालयों में हिंदी की विविध गतिविधियों के अवसर पर हमें Gen-Z की सक्रियता और ऊर्जा से प्रेरणा लेकर अपनी भाषा, संस्कृति और समाज के विकास में योगदान देना चाहिए।

''राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा होता है।''

– महात्मा गांधी

''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।''

– भारतेंदु हरिश्चंद्र

युवा आज की तेज रफ्तार दुनिया में: डिजिटल जीवन, कैरियर दबाव और मानसिक स्वास्थ्य का संतुलन

भोनगिरी प्रसुना
वैज्ञानिक-बी

आज का युग जिसे हम "Youth of Today" कहते हैं, एक अनोखी और चुनौतीपूर्ण दुनिया में बड़ा हो रहा है। यह वह पीढ़ी है जिसने स्मार्टफोन, इंटरनेट और सोशल मीडिया के साथ अपने बचपन की शुरुआत की है। ये तकनीक उन्हे ज्ञान, अवसर और कनेक्टिविटी देती है, लेकिन साथ ही यह उनकी मानसिक और भावनात्मक दुनिया पर दबाव भी डालती है।

सोशल मीडिया ने युवाओं को "हर समय जुड़े रहने" की आदत में डाल दिया है। हर दिन हजारों पोस्ट, वीडियो और अपडेट्स देखते हुए वे अपने जीवन की तुलना दूसरों से करने लगते हैं। यह तुलना अक्सर आत्म-संदेह, असंतोष और चिंता को जन्म देती है। युवा सोचते हैं, "क्या मैं अपने दोस्तों और परिवार की अपेक्षाओं पर खरा उतर रहा हूँ? क्या मेरा जीवन उतना रोचक है?" डिजिटल दुनियाँ की तेजी में वे उनकी ध्यान क्षमता और मानसिक संतुलन खोते जा रहे हैं, और भावनाओं को समझने और व्यक्त करने की क्षमता कमजोर होती जा रही है।

सिर्फ डिजिटल दबाव ही नहीं, बल्कि करियर और पेशेवर जीवन की चुनौतियाँ भी इस पीढ़ी पर भारी पड़ रही हैं। उच्च शिक्षा, नौकरी की प्रतिस्पर्धा, वित्तीय सुरक्षा और करियर ग्रोथ जैसी अपेक्षाएँ उनके मानसिक स्वास्थ्य पर भारी दबाव डाल रही हैं। कई युवा सोचते हैं कि अगर वे समय पर सही निर्णय नहीं लेंगे, तो उनका भविष्य खतरे में पड़ जाएगा। यह निरंतर चिंता और तनाव उन्हें कभी-कभी भावनात्मक थकान और अकेलेपन की ओर ले जाता है।

आज के युवा अपने व्यक्तिगत रिश्तों में भी दूरी महसूस कर रहे हैं। सोशल मीडिया पर जुड़े रहने के बावजूद, वास्तविक और गहरे संबंध कम होते जा रहे हैं। परिवार के साथ समय बिताना, दोस्तों के साथ खुलकर बातें करना और अनुभव साझा करना कम हो गया है। इसके बजाय अधिकांश युवा अपनी भावनाओं को स्क्रीन के पीछे दबाकर रख रहे हैं। प्रकृति से भी उनका जुड़ाव कमजोर हो रहा है। खुली हवा में समय बिताने, खेल-कूद में भाग लेने या प्राकृतिक वातावरण का आनंद लेने के बजाय वे अधिकतर समय मोबाइल और डिजिटल स्क्रीन के सामने बिता रहे हैं। इस दबाव से शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य पर भी असर पड़ रहा है।

लेकिन, इस तेज रफ्तार और चुनौतीपूर्ण जीवन में भी उम्मीद की किरण मौजूद है। कई युवा अब मानसिक स्वास्थ्य, ध्यान, योग और स्वयं की भावनाओं को समझने की ओर बढ़ रहे हैं। छोटे-छोटे कदम, जैसे फोन से कुछ समय दूर रहना, दोस्तों और परिवार के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताना, प्रकृति के साथ समय, जुड़ाव बढ़ाना, उनकी मानसिक स्थिति को सुधार सकते हैं।

यदि युवा इस संतुलन को समझ लें, तो न केवल उनका व्यक्तिगत जीवन खुशहाल होगा, बल्कि यह समाज और देश के लिए भी सकारात्मक बदलाव ला सकता है। वे न केवल अपने करियर में सफल होंगे, बल्कि दूसरों के लिए प्रेरणा भी बनेंगे। युवा पीढ़ी की यह क्षमता, उनकी मेहनत, जागरुकता, और

भावनात्मक समझ ही उन्हें भविष्य की चुनौतियों का सामना करने और एक खुशहाल समाज बनाने में सक्षम बनाएगी।

संक्षेप में, आज का युवा एक ऐसी दुनिया में जी रहा है जहाँ डिजिटल जीवन, करियर दबाव, मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक अपेक्षाओं का संतुलन बनाना चुनौतीपूर्ण है। लेकिन यही युवा पीढ़ी अपने जुनून, समझ और प्रयास से इन बाधाओं को पार कर सकती है। यदि वे अपनी डिजिटल आदतों, करियर की योजनाओं और भावनात्मक स्वास्थ्य के बीच संतुलन बनाए रखें, तो न केवल उनके लिए बल्कि पूरे समाज के लिए सकारात्मक बदलाव संभव है।

''हिंदी ही भारत की ऐसी भाषा है जो पूरे देश को एक सूत्र में बाँध सकती है।''

– राहुल सांकृत्यायन

''हिंदी भारत के जन-जीवन की भाषा है।''

– रामधारी सिंह दिनकर

अमर सिपाही

प्रियंका प्रियदर्शिनी बेहेरा
वरिष्ठ तकनीकी सहायक-बी

कुछ बीते हुए पल रह गए इतिहास बनकर,
कुछ यादें रह गईं ख्वाब बनकर,
कहना तो है बहुत कुछ लोगों को,
जो बातें रह गईं कहानी बनकर ।।
वक्त ऐसा आया था,
जब धरती भी कांप उठी थी,
जब भारत मां को चोट लगी थी ।।
कोई सिख, कोई जाट मराठा थे,
कोई गोरखा, कोई मद्रासी,
अपने खून से लिख गए,
वह इस देश के अमर सिपाही थे ।।
सरहद पर हो गए खून से लथपथ,
मगर सिर अपना झुकाया नहीं,
वो हैं इस देश के सिपाही,
जो जंग के मैदान में कभी हारे नहीं ।।
रह गए कुछ वादे,
जो किए थे अपने रिश्तेदार से,
लौट के आएंगे घर,
हर जश्न और त्योहारों पे ।।
मिट्टी का हर कण-कण है उनका श्रृंगार,
सिपाही का जज्बा होता है संस्कार,
शहीद होकर भी अमर बन जाते हैं,
वह इस देश के अमर सिपाही कहलाते हैं ।।

कृतज्ञता : जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू

निशा राजपूत
प्रशासनिक सहायक – ए

कृतज्ञता एक ऐसा भाव है जो हमारे जीवन को समृद्ध एवं अर्थपूर्ण बनाता है। यह हमें अपने आस-पास के लोगों, अनुभवों और चीजों के प्रति कृतज्ञ होने की प्रेरणा देती है। कृतज्ञ होने से हमारा दृष्टिकोण सकारात्मक होता है, और हम जीवन की छोटी खुशियों को महसूस कर पाते हैं।

कृतज्ञता क्यों महत्वपूर्ण है?

कृतज्ञता हमें जीवन के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण देती है। यह तनाव कम करती है, रिश्तों को मजबूत बनाती है, और हमें अधिक संतुष्ट महसूस कराती है। जब हम कृतज्ञ होते हैं, तो हम अपने जीवन में मौजूद अच्छी चीजों पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

मैं किसके प्रति कृतज्ञ हूँ?

1. परिवार – मेरे परिवार ने मुझे हमेशा समर्थन और प्यार दिया है। उनकी उपस्थिति मेरे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है।

2. मित्र – मेरे दोस्तों ने मुझे जीवन के विभिन्न पहलुओं में साथ दिया है और मुझे हँसाया है।

3. शिक्षक - जिन्होंने मुझे ज्ञान और प्रेरणा दी, उनके मार्गदर्शन के लिए आभारी हूँ।

4. प्रकृति – प्रकृति की सुंदरता और शांति मुझे हमेशा प्रभावित करती है।

कृतज्ञता का अभ्यास कैसे करें?

1. धन्यवाद पत्र – उन लोगों को पत्र लिखें, जिनके प्रति आप कृतज्ञ हैं।

2. दैनिक चिंतन – हर दिन कुछ पल निकालकर उन चीजों के बारे में सोचो जिनके लिए आप आभारी हैं।

3. सकारात्मक सोच – जीवन की अच्छी चीजों पर ध्यान केंद्रित करें।

4. साझा करना – अपनी कृतबल दूसरों के साथ बांटे।

कृतज्ञता का प्रभाव –

कृतज्ञता हमारे मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। यह हमें अधिक सहानुभूति और समझदारी के साथ जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है। जब हम कृतज्ञ होते हैं, तो हम दूसरों के प्रति भी अधिक दयालु और सहायक होते हैं।

निष्कर्ष – कृतज्ञता एक पवित्र भाव है जो हमारे जीवन को आनंदमय और अर्थपूर्ण बनाती है। आइए, हम अपने जीवन में कृतज्ञता को अपनाएं और इसके सकारात्मक प्रभावों को महसूस करें।

कंक्रीट के ढेर (कविता)

सिद्धार्थ गिरधर
तकनीकी अधिकारी – बी

प्रस्तावना

आज का दौर तेजी से फैलते शहरीकरण और अंधाधुंध निर्माण का है। हर ओर गगनचुंबी इमारतें खड़ी हो रही हैं, जिनका नाम या तो ''ग्रीन व्यू'' या ''लक्जरी हाइट्स'' होता है, लेकिन इन ढाँचों की छाया में गाँव की चौपालें, बच्चों के खेल के मैदान और प्रकृति की हरी-भरी झलकें धीरे-धीरे लुप्त हो रही हैं।

प्रकृति की जगह जब कंक्रीट ले लेता है, तो हवा, पानी और जमीन तीनों ही संकट में आ जाते हैं। एक ओर चमचमाते टावर और सीमेण्ट की दीवारें खड़ी हैं, दूसरी ओर आम इंसान साँस लेने तक के लिए जगह खोजता है। यही विडंबना इस कविता का मूल है।

प्रस्तुत कविता ''कंक्रीट के ढेर'' एक व्यंगात्मक रचना है, जिसमें हास्य और कटाक्ष के माध्यम से इस असंतुलित विकास की तस्वीर खींची गई है। यह कविता हमें सोंचने पर मजबूर करती है कि क्या वास्तव में ऊँची-ऊँची इमारतें ही विकास का प्रतीक हैं, या फिर ये केवल "कंक्रीट के ढेर'' हैं, जिन्होंने इंसान को उसकी जड़ों और प्रकृति से दूर किया है।

कंक्रीट के ढेर

कभी थे बगुले, कभी थी नदियाँ,
कभी थी चौपाल, कभी थीं गलियाँ।
अब हैं बस ईंट, गारे की थैली,
टावर खड़े जैसे मिठाई की जेली।

हर तरफ बस बोर्ड ही बोर्ड,
"लग्जरी हाईट्स'' और ''सिल्वर होम्स'' की होर्ड।
नाम बड़े, दर्शन छोटे,
किराए में किडनी बेचो तो खोटे।

बालकनी में पौधा टंगा प्लास्टिक का,
कहते हैं ''गीन व्यू'' – बड़ा ही क्लासिक का।
छत पे जिम, तो बेसमेंट में मॉल,
पर न खुली हवा, न पंछियों के बोल।

बच्चे अब लुकाछिपी कहाँ खेलें,
बस पार्किंग में हॉर्नों से झगड़े झेलें।
पार्किंग में गाड़ियाँ, हार्न बजाएँ,
बच्चे वहीं क्रिकेट-फुटबॉल खेलें।

गली का मैदान, चौपाल, वो गाँव,
सबको निगल गया कंक्रीट का भाव।

लिफ्टें अटकें तो हो जाए मात,
ऊपर से नीचे आने में लगे आधी रात।
अटके लिफ्ट तो खलबली मचती,
सीढ़ियाँ चढ़ो तो आत्मा निकलती।
ऊपर से नीचे आना है खेल,
जैसे पर्वतारोहण का मेल।

गेटेड कम्युनिटी, सिक्योरिटी गार्ड,
पर दिल में बेचैनी, दिमाग में हार,
गेटेड सोसाइटी – सुरक्षा कड़ी,
फिर भी चोर घुस जाए घड़ी-घड़ी।

कभी जो था घर, अब है शो-रूम,
सीमेण्ट की खुशबू, पसीने का परफ्यूम।
इन्हें कहते हैं "नयी सभ्यता का नजारा",
पर सच तो ये है – कंक्रीट का बंजारा!

मुम्बई, दिल्ली, या हर शहर,
जहाँ भी देखो, बस यही कहर।
मानव ने बोया था सपना सुनहरा,
कंक्रीट ने छीना हरियाली का पहरा।

मुम्बई से दिल्ली, पटना से पुणे,
कंक्रीट ही कंक्रीट – जमे हर कोने।
गाँव की चौपाल, छत पे सोना,

सबको खा गया ये सीमेण्ट का होना।

पहले थे पेड़, हवा थी प्यारी,
अब हैं टावर – सीमेण्ट की सवारी।
धरती बोली – ''ओ भाई थम,
इतना बोझा कहाँ तक सहन करूँ मैं ?''

बालकनी छोटी – जैसे माचिस की डिब्बी,
किराया बड़ा – जैसे पूरी शादी की तिब्बी।

जिम बना है पंद्रहवें फ्लोर पर,
पर सीढ़ियाँ चढ़ते ही दम निकले जोर पर।
तैरने का पूल, पर पानी नहीं,
फोटोशूट में नीला, असल में कहीं नहीं।

हर बिल्डिंग का नाम "ग्रीन व्यू'',
पर सामने दिखे बस ''सीमेण्ट ब्ल्यू''।
सूरज ढूँढ़े खिड़की से रास्ता,
पर कंक्रीट ने उसका भी काटा वास्ता।

कहते हैं – "ये है विकास की निशानी!''
पर प्रकृति बोली – "मेरी जान की बलि चढ़ानी?"
इंसान बोला – "देखो, मेरी शान!''
पेड़ बोला – "भाई तेरी क्या जान?''

कंक्रीट का ये महाभारत चल रहा,
धरती का धैर्य धीरे-धीरे जल रहा।
शहर हँसते हैं, पर रो भी रहे,
हम सब भी सीमेण्ट की कैद में जी रहे।

अनुशासन

रोहित
तकनीशियन-ए

अनुशासन का अर्थ

अनुशासन का मतलब अपने जीवन को नियमों और अनुशासन के साथ व्यवस्थित करना है। यह एक ऐसी आदत है जो हमारे जीवन को सही दिशा में ले जाती है। अनुशासन का पालन करना न केवल बच्चों के लिए, बल्कि बड़ों के लिए भी जरूरी है। यह हमारे जीवन में संतुलन और सकारात्मकता लाता है।

बच्चों के जीवन में अनुशासन का महत्व

बच्चों के लिए अनुशासन का विशेष महत्व है। स्कूल में समय पर पहुंचना, पढ़ाई पर ध्यान देना, माता-पिता और शिक्षकों की बात मानना अनुशासन के उदाहरण हैं। अनुशासन से बच्चे समय का सही उपयोग करना सीखते हैं और उनकी आदतें सुधरती हैं। यह उनके भविष्य को उज्ज्वल बनाता है।

समाज और परिवार में अनुशासन का महत्व

अनुशासन सिर्फ व्यक्ति के लिए नहीं, बल्कि परिवार और समाज के लिए भी जरूरी है। परिवार में अनुशासन होने से आपसी प्रेम और सम्मान बढ़ता है। वहीं, समाज में अनुशासन से सभी लोग एक दूसरे का सम्मान करते हैं और शांति बनी रहती है।

अनुशासन के लाभ

अनुशासन के कई फायदे हैं। यह हमें बुरी आदतों और बुरी संगत से दूर रखता है। अनुशासन से हम अपने लक्ष्य तक आसानी से पहुंच सकते हैं। यह हमें सही और गलत में फर्क करना सिखाता है। अनुशासन का पालन करने वाले व्यक्ति को समाज में आदर और सफलता मिलती है।

अनुशासन के बिना जीवन

बिना अनुशासन के जीवन अव्यवस्थित और कठिन हो सकता है। अनुशासन के बिना व्यक्ति समय की कद्र नहीं करता और अपने कार्यों में असफल रहता है। इसके कारण व्यक्ति के जीवन में तनाव और असंतुलन आ सकता है।

अनुशासन कैसे अपनाएं

अनुशासन को अपने जीवन में लाने के लिए हमें छोटे-छोटे कदम उठानें चाहिए। बच्चों को समय पर सोना और उठना, होमवर्क करना और बड़ों की बात मानने की आदत डालनी चाहिए। बड़ों को अपने कार्यों को समय पर पूरा करना चाहिए और अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित रखना चाहिए।

अनुशासन के बारे में रोचक तथ्य

अनुशासन आपको पाबंदी नहीं, बल्कि स्वतंत्रता देता है।

अनुशासन दिमाग को जिम जैसा फायदा देता है, क्योंकि यह दिमाग को मजबूत और सोचने में तेज बनाता है, जैसे जिम शरीर को मजबूत बनाता है।

प्रकृति का हर नियम अनुशासन सिखाता है, जैसे चांद-तारे, सूरज, और मौसम सबका अपना समय होता है।

बच्चों को अनुशासन जल्दी और आसानी से सिखाया जा सकता है।

अनुशासन के इस लेख से हमें क्या सीख मिलती है?

अनुशासन के इस लेख से बच्चों को यह समझ आएगा कि अनुशासन जीवन को व्यवस्थित और सफल बनाता है। वे सीखेंगे कि समय का पालन, बड़ों की बात मानने और सही काम करने से जीवन बेहतर होता है। यह लेख उन्हें अनुशासन के महत्व को समझने के साथ-साथ लेख लिखने का सही तरीका भी सिखाएगा। छोटे शब्दों में लिखने से उन्हें आत्मविश्वास मिलेगा और वे अपने विचार अच्छे से व्यक्त कर पाएंगे।

"हिंदी भाषा भारतीय जनता के हृदय की वाणी है।"

– रामचंद्र शुक्ल

"हिंदी हमारी संस्कृति और परंपरा की पहचान है।"

– हरिवंश राय बच्चन

अपना मन

प्रियदर्शी सिंह
तकनीकी अधिकारी-ए

बड़ी लगी है भूख, कुछ अच्छा खाने का मन कर रहा है,
क्या खाएं यह समझ नहीं आ रहा |
कितना अच्छा होता, माँ के हाथ का खाना होता
पूड़ी, सब्जी, खीर, सेवईयां होती
अंगारे में पके हुए बैगन और टमाटर;
लिट्टी और बाटी के साथ चोखा होता |
अब जाने भी दो, पता नहीं यह सब कब होता;
यह सब केवल खयालों में ही अच्छा है
घर के पास होता, तो अच्छा होता |
चलो उठो बहुत हुआ खयाली पुलाव,
चलकर किचन में कुछ बना लेता हूँ
कुछ प्यारा सा अपने हाथ का खा लेता हूँ,
गया किचन में सो नजर पड़ी, बर्तन तो सारे गंदे पड़े हैं,
अब क्या करूं भूख से हम थके पड़े हैं |
एक काम करता हूँ, जाने देता हूँ,
ज़ोमैटो, स्विगी से ऑनलाइन ऑर्डर कर लेता हूँ |

जीवनदात्री प्रकृति

सुमन
आशुलिपिक – II

क्या वर्णन करूं मैं,
अपनी जीवनदात्री प्रकृति की ।।

जिसमें निहित है,
निःस्वार्थ भाव से देने की,
हर कष्ट से मुक्ति देने की ।।

वो सूर्य है जिनमें,
है समाहित ताप, उर्जा है, रोशनी भी ।।

है चंद्रमा भी जिनमें,
शीतलता की छाया है ।।

पक्षियों की सुरीली चहचहाहट से,
सुबह मनभावन हो जाती है ।।

बादलों को छूते पर्वतों के,
मनमोहक दृश्यों से,
नदियों के अविरल धारा तक,
असीमित भंडार संजोए हैं ।।
जीवों के जीवन चक्रों के,
निरंतर बढ़ते रहने में,
प्रकृति अमूल्य धरोहर है ।।
प्रकृति के इन सौंदर्य स्वरूपों से,
मन हर्षोल्लासित हो जाता है ।।

यह तो बस कहती यही,
कुछ क्षण बैठो मेरी छाया में ।।
हर दुःख दूर हो जाएगा,
मेरी क्षणिक पल की छाया से ।।

हर रचना हमारी प्रकृति की,
देती है नई सीख जीवन जीने की ।।

जीवन पथ के राही हो,
मंजिल से न भटको,
यही सीख ये देती है ।।

क्या वर्णन करूं मैं,
अपनी जीवनदात्री प्रकृति की ।।

जिसमें निहित है,
निःस्वार्थ भाव से देने की,
हर कष्ट से मुक्ति देने की ।।

दयालुता का महत्व

एस भानु प्रकाश
तकनीकी अधिकारी – ए

आज की तेज रफ्तार जिंदगी में, जहाँ हर व्यक्ति अपने लक्ष्य की ओर दौड़ रहा है, वहाँ मानवीय मूल्यों का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। इन्हीं मूल्यों में एक सबसे अहम गुण है- दयालुता। यह एक ऐसा गुण है जो न केवल दूसरों को सुकून देता है, बल्कि हमें भी आंतरिक शांति का अनुभव कराता है।

दयालुता का अर्थ केवल किसी को धन देना या कोई बड़ा उपकार करना नहीं होता। यह किसी को मुस्कान देना, सहानुभूति से बात करना, या किसी छोटे से संकट में साथ खड़े होने जितना सरल भी हो सकता है। अक्सर हम सोचते हैं, "मेरी छोटी-सी मदद से क्या फर्क पड़ेगा!'' लेकिन कई बार वही छोटा-सा प्रयास किसी के लिए बड़ी राहत बन जाता है।

महात्मा गाँधी ने कहा था:

स्वयं को खोजने का सबसे अच्छा तरीका है – स्वयं को दूसरों की सेवा में खो देना।"

यह कथन दर्शाता है कि दयालुता केवल दूसरों की मदद करने का जरिया नहीं है, बल्कि यह स्वयं को समझने और बेहतर इंसान बनने का रास्ता भी है।

दयालुता की सबसे बड़ी शक्ति यह है कि यह चुपचाप काम करती है। एक ऐसे दौर में जहाँ शोर, स्पर्धा और दिखावा हर ओर है, वहाँ दयालुता अपनी सादगी से एक अलग प्रभाव छोड़ती है। यह न तो प्रशंसा की अपेक्षा करती है, न ही किसी इनाम की। फिर भी इसका प्रभाव गहरा और स्थायी होता है। यह केवल सामने वाले को नहीं, बल्कि उस व्यक्ति को भी बदल देती है जो इसे अपनाता है।

आज जब तकनीक ने हमें दुनिया से जोड़ा तो है, लेकिन भावनात्मक रूप से थोड़ा दूर भी कर दिया है, ऐसे में दयालुता एक सेतु का काम कर सकती है। एक विचारपूर्ण संदेश, किसी के हालचाल पूछना या चुपचाप किसी की बात सुन लेना ये सब भी दयालुता के ही रूप हैं।

वर्ष 2021 में किए गए एक वैश्विक अध्ययन (World Happiness Report) में यह पाया गया जिन देशों में नागरिक अधिक सहानुभूतिपूर्ण और दयालु हैं, वहाँ समाज में अवसाद, तनाव और आत्महत्या की दरें कम देखी गईं।

भारत में, "सेवा'' और "करुणा'' की परंपरा सदियों पुरानी रही है। "अतिथि देवो भव:", "वसुधैव कुटुम्बकम्" जैसे विचार दर्शाते हैं कि दयालुता भारतीय संस्कृति की जड़ में है।

दयालुता को मापा नहीं जा सकता, लेकिन यह गिनती से कहीं आगे तक प्रभाव डालती है। यही कारण है कि आधुनिक मनोविज्ञान में भी "Kindness therapy'' (दयालुता की चिकित्सा) एक प्रभावशाली चिकित्सा पद्धति के रूप में उभर रही है।

दयालुता कोई पढ़ाई जाने वाली चीज नहीं है, यह महसूस की जाती है। अगर हम अपने बच्चों को सिखा सकें कि मदद करना क्यों जरूरी है, तो हम एक बेहतर समाज की ओर बढ़ सकते हैं। परिवार, स्कूल और समाज सभी को मिलाकर एक ऐसी पीढ़ी तैयार करनी होगी जो न केवल सफल हो, बल्कि संवेदनशील और दयालु भी हो।

रवींद्रनाथ ठाकुर ने कहा था:

मैं सोया और सपना देखा कि जीवन आनंद है। मैं जागा और देखा कि जीवन सेवा है। मैंने सेवा की, और पाया कि सेवा ही आनंद है।

ये पंक्तियाँ सेवा और दयालुता के बीच गहरे संबंध को दर्शाती हैं।

इसी तरह स्वामी विवेकानंद ने कहा था:

‘‘वे ही जीते हैं जो दूसरों के लिए जीते हैं।’’

यह विचार हमें याद दिलाता है कि सच्चा जीवन वही है जो दूसरों की भलाई में समर्पित हो।

समाज में दयालुता का प्रभाव

दयालुता केवल व्यक्ति विशेष तक सीमित नहीं रहती; यह समाज के ताने-बाने को भी मजबूत बनाती है। जब हम दूसरों की मदद करते हैं, तो सामाजिक विश्वास और सहयोग की भावना बढ़ती है। यही भावना आपसी समझ, सद्भाव और सामूहिक प्रगति की ओर ले जाती है।

शिक्षा जगत में, ‘Kindness Curriculam’ को कई देशों ने अपनाया है। उदाहरण के लिए, दिल्ली के सरकारी स्कूलों में ‘हैपीनेस क्लास’ की शुरुआत हुई, जिसमें बच्चों को सहानुभूति, आत्मनिरीक्षण और दयालुता जैसे भावों को सिखाया जाता है। यह प्रयोग बहुत सफल रहा है।

मानसिक स्वास्थ्य और दया

आधुनिक शोध यह भी दिखाते हैं कि दयालुता हमारे मस्तिष्क और शरीर पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। जब हम किसी की मदद करते हैं, तो हमारे शरीर में ऑक्सीटोसीन (Oxytocin) का स्तर बढ़ता है, जिससे हम अधिक खुश, शांत और जुड़ाव महसूस करते हैं।

दयालु लोग अधिक भावनात्मक रूप से स्थिर होते हैं और कठिन परिस्थितियों में भी संतुलन बनाए रखते हैं। यही कारण है कि संकट या आपदा के समय भी, समाज के वही वर्ग सबसे आगे आते हैं, जिनमें सहानुभूति और सेवा की भावना गहराई से मौजूद होती है।

निष्कर्ष:

दयालुता कोई बड़ा कार्य नहीं, बल्कि रोजमर्रा के छोटे-छोटे अच्छे कार्यों का नाम है और जब ये छोटे-छोटे कार्य हमारी आदत बन जाते हैं, तब वे समाज में बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं।

दयालुता कमजोरी नहीं, बल्कि यह एक ऐसी शक्ति है जो नर्मी से सबसे कठोर दिल को भी छू सकती है। यह कोई शोर नहीं करती, परंतु इसकी गूँज बहुत दूर तक जाती है।

जब दुनिया में तनाव, अलगाव और असहिष्णुता बढ़ रही हो, तब दयालुता ही वह मानवीय गुण है जो सबको एक सूत्र में बाँध सकता है। यह एक ऐसी शक्ति है जो रिश्ते, समाज और भविष्य को बेहतर बना सकती है।

आइए, हम दयालुता को न केवल एक विचार मानें, बल्कि इसे अपने व्यवहार में अपनाएँ - हर दिन, हर स्थान, हर परिस्थिति में।

''हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा बनने की पूर्ण योग्यता रखती है।''

– पुरुषोत्तम दास टंडन

''हिंदी में विश्व की किसी भी भाषा की अभिव्यक्ति की क्षमता है।''

– डॉ. रघुवीर

मुंशी प्रेमचंद : कार्य व जीवनी

विक्रांत जे. ताकसाण्डे
तकनीकी अधिकारी-बी

मुंशी प्रेमचंद भारत के उपन्यास सम्राट माने जाते हैं, उनके युग का विस्तार 1880 से 1936 तक है। यह कालखण्ड भारत के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण है। इस युग में भारत का स्वतंत्रता संग्राम नये दौर से गुजरा है। प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। वे एक सफल लेखक, देशभक्त नागरिक, कुशल वक्ता, जिम्मेदार संपादक और संवेदनशील रचनाकार थे। प्रेमचंद हिंदी और उर्दू के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार, कहानीकार एवं विचारक थे। 1906 से 1936 के बीच लिखा गया प्रेमचंद का साहित्य इन तीस वर्षों का सामाजिक सांस्कृतिक दस्तावेज है। इसमें उस दौर के समाजसुधार आंदोलनों, स्वाधीनता संग्राम तथा प्रगतिवादी आंदोलनों के सामाजिक प्रभावों का स्पष्ट चित्रण है। उनमें दहेज, अनमेल विवाह, पराधीनता, लगान, छुआछूत, जाति भेद, विधवा विवाह, आधुनिकता, स्त्री-पुरुष समानता आदि उस दौर की सभी समस्याओं का चित्रण मिलता है। उनके अधिकांश उपन्यास, साहित्य, पत्रिकाएं जैसे, जमाना, सरस्वती, माधुरी, मर्यादा, चाँद, सुधा आदि हिंदी तथा उर्दू दोनों भाषाओं में प्रकाशित हुई हैं। उन्होंने हिंदी समाचार पत्र जागरण तथा साहित्यिक पत्रिका हंस का संपादन और प्रकाशन भी किया। इसके लिए उन्होंने सरस्वती प्रेस खरीदा था। हिंदी कहानी तथा उपन्यास के क्षेत्र में 1918 से 1936 तक के कालखण्ड को प्रेमचंद युग कहा जाता है। आज भी उनके लिखे हुए साहित्य को पढ़ा एवं पढ़ाया जाता है।

मुंशी प्रेमचंद का जीवन गरीबी से लड़ते हुए गुजरा, उन्होंने अपनी पढ़ाई मैट्रिक तक की थी। जीवन के प्रारंभ में ही गांव से दूर नंगे पाव जाना पड़ता था। पढ़ाई के दौरान ही इनके पिता का देहांत हो गया। प्रेमचंद को पढ़ने का शौक था और वे वकील बनना चाहते थे। प्रेमचंद महीनाभर तंगी और चीजों के अभाव में अपना जीवन बिताते थे और इसी प्रतिकूल परिस्थितियों में प्रेमचंद ने मैट्रिक की परीक्षा पास की। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य, पर्सियन और इतिहास विषयों से स्नातक की उपाधि प्राप्त की।

गरीबी, अभाव जैसी जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियाँ भी प्रेमचंद के साहित्य की ओर उनके झुकाव को रोक न सकी। प्रेमचंद ने मैट्रिक के दौरान ही उपन्यास पढ़ना आरंभ कर दिया था। उनको बचपन से ही उर्दू आती थी, उन पर उर्दू उपन्यास का ऐसा उन्माद छाया कि वे किताबों की दुकान पर ही सब उपन्यास एवं साहित्यिक किताबें पढ़ गए। उन्होंने तीन साल के अंदर ही सैकड़ों किताबों को पढ़ डाला। प्रेमचंद को बचपन में ही उर्दू के समकालीन उपन्यासकार सरुर मोमा शार, रतन नाथर सरशार आदि के दीवाने हो गये। जहाँ भी इनकी किताबें मिलतीं उसे पढ़ने का हर संभव प्रयास करते थे।

इनकी अधिकतर कहानियों में निम्न व मध्य वर्ग का चित्रण है। **डॉ. कमलकिशोर गोयनका** ने प्रेमचंद की संपूर्ण हिंदी-उर्दू कहानी को प्रेमचंद कहानी रचनावली नाम से प्रकाशित कराया है। इनकी इन्ही क्षमताओं के कारण इन्हें 'कलम का जादूगर' कहा जाता है। प्रेमचंद साहित्य की वैचारिक यात्रा आदर्श यथार्थ की ओर उन्मुख है। सेवासदन के दौर में वे यथार्थवादी समस्याओं को चित्रित तो कर रहे

थे, लेकिन उसका एक आदर्श समाधान भी निकाल रहे थे। 1936 तक उन्होंने महाजनी सभ्यता, गोदान और कफन जैसी रचनाएँ अधिक यथार्थपरक हो गईं। प्रेमचंद स्वाधीनता संग्राम के सबसे बड़े कथाकार हैं, उन्हें राष्ट्रवादी भी कहा जाता था। प्रेमचंद मानवतावादी भी थे और मार्क्सवादी भी। प्रगतिवादी विचारधारा उन्हें प्रेमाश्रम के दौर से ही आकर्षित कर रही थी। प्रेमचंद ने 1936 में **प्रगतिशील लेखक संघ** के पहले सम्मेलन को सभापति के रूप में संबोधित किया था। उनका यही भाषण प्रगतिशील आंदोलन के घोषणा पत्र का आधार बना।

रामविलाश शर्मा ने प्रेमचंद और उनका युग में प्रेमचंद के जीवन तथा उनके साहित्य का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया। प्रेमचंद सिनेमा से भी जुड़े थे, **सत्यजित राय** ने उनकी दो कहानियों पर यादगार फिल्में बनाईं। 1977 में ''**शतरंज के खिलाड़ी**'' और 1981 में ''**सद्गती**''। 1977 में मृणाल सेन ने प्रेमचंद की कहानी **कफन** पर आधारित ''**ओका ऊरी**'' कथा नाम से एक तेलुगु फिल्म बनाई, जिसे सर्वश्रेष्ठ तेलुगू फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला। टी. वी. धारावाहिक ''**निर्मला**'' भी बहुत लोकप्रिय हुआ था।

सादा एवं सरल जीवन के मालिक प्रेमचंद सदा आनंद में रहते थे। विषमताओं भरे जीवन में हसमुख होना एक बहादुरी का काम है। इससे इस बात को भी समझा जा सकता है कि वह अपूर्व जीवनी का द्योतक थे। वे सरलता, सौजन्यता और उदारता की मूर्ति थे। जहां उनके हृदय में मित्रों के लिए उदार भाव था, वहीं उनके हृदय में गरीबों एवं पीड़ितों के लिए सहानुभूति का अथाह सागर था। प्रेमचंद उच्च कोटि के मानव थे, वह सदा साधारण पोशाक में रहते थे। वे आडंबर एवं दिखावे से मीलों दूर रहते थे। जीवन में न तो उनको विलास मिला और न ही उनको इसकी तमन्ना थी। तमाम महापुरुषों की तरह अपना काम स्वयं करना पसंद करते थे। प्रेमचंद के कहानी, उपन्यास में इतनी सच्चाई लगती थी कि वे उसमें ही गुजर के आए हों और उन्होंने उस प्रसंग को जिया हो।

प्रेमचंद ने अपने संबंध में मामा के एक विशेष प्रसंग को लेकर अपनी सबसे पहली रचना लिखी। 13 साल की आयु में इस रचना के पूरा होते ही प्रेमचंद साहित्यकार की पंक्ति में खड़े हो गए। सन 1894 में ''होनहार बिरवान के चिकने होत पात'' नाटक की भी रचना की। उसके बाद उन्होंने अनेक कहानियाँ, उपन्यास लिखे, जैसे रूठी रानी, प्रेमा, हमखुर्मा व हमसवाब। जब कुछ आर्थिक अनिश्चितता आई तो 1907 में पाँच कहानियों का संग्रह **सोजे वतन** की रचना की। जैसा कि इसके नाम से ही मालूम होता है, इसमें देश प्रेम और देश के जवानों के दर्द को रचनाकार ने प्रस्तुत किया। सेवा सदन, मिल मजदूर तथा गोदान की रचना की। गोदान आपकी समस्त रचनाओं में सबसे ज्यादा मशहूर हुई। अपनी जिंदगी के आखिरी सफर में **मंगलसूत्र** नामक अंतिम उपन्यास लिखना आरंभ किया। दुर्भाग्यवश मंगलसूत्र को अधूरा ही छोड़ गये। इससे पहले उन्होंने महाजनी और पूँजीवादी युग प्रवृत्ति की निंदा करते हुए **महाजनी सभ्यता** नाम से एक लेख भी लिखा था।

उनके जीवनी के ऊपर, उनकी पत्नी द्वारा उनके व्यक्तित्व के घरेलू पक्ष पर लिखी गई ''**प्रेमचंद घर में**'', ''**प्रेमचंद कलम का सिपाही**'' उनके पुत्र **अमृतराय** द्वारा उनके पत्रों का उपयोग कर लिखी गई है।

सन 1936 में प्रेमचंद बीमार रहने लगे। उन्होंने अपने इस बीमार काल में ही अपने प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना में सहयोग दिया। आर्थिक कष्टों तथा इलाज ठीक से न कराये जाने के कारण 8 अक्टूबर, 1936 का महान लेखक का देहावसान हो गया।

''हिंदी भारतीय जनता के जीवन की भाषा है।''

– रामविलास शर्मा

''हिंदी का विकास राष्ट्र के विकास के जुड़ा हुआ है।''

– अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

डोली में नहीं विदा होते बेटे.....

सूरज कुमार मण्डल
तकनीशियन - ए

बेटे डोली में विदा नहीं होते और बात है मगर,
उनके नाम का नियुक्ति पत्र आँगन छूटने का पैगाम लाता है,
जाने की तारीखों के नजदीक आते-आते मन बेटे का चुपचाप रोता है,
अपने कमरे की दीवारें देख-देख घर की आखरी रात नहीं सोता है,
होश सभाँलते-सभाँलते घर की जिम्मेदारियाँ संभालने लगता है,
शहर, गलियाँ, घर छूटने का दर्द समेटे सूटकेस में किताबें और कपड़े सहेजता है,
जिस आँगन में पला-बढ़ा आज उसके छूटने पर सीना चाक-चाक फटता है,
अब नहीं सजती गेट पर दोस्तों की गुलजार महफिल न कोई बाइक का तेज हॉर्न
बेपरवाही का इल्जाम किसी पर नहीं लगता झिड़कियाँ सुनता खुद ही,
देर तक कोई नहीं सोता है,
वीरान कर गया घर का कोना-कोना जाते हुए बेटी सा सीने से नहीं लगता है,
ट्रेन के दरवाजे पर गीली आँखों से मुस्कुराता है
अलगाव का दर्द जब्त करता, खुद बोझिल सा लगता है,
बेटे डोली में विदा नहीं होते ये और बात है............
फिक्र करता माँ की मगर बताना नहीं आता है,
कर देता है 'ऑनलाइन' घर के काम दूसरे शहरों से
और जताना भी नहीं आता,
बड़ी से बड़ी मुश्किल छिपाना आता है माँ से फोन पर पिता की खबर
पूँछते और पिता से कुछ पूँछना सूझ नहीं पाता है,
लापरवाह, बेतरतीब लगते हैं बेटे मजबूरियों में बंधे
दूर रहकर भी जिम्मेदारियाँ निभाना आता है,
पहुँचकर अजनबी शहर में जरूरतों के पीछे दिल बच्चा बना माँ के आँचल में बँध जाता है,
ये बात और है बेटे डोली में विदा नहीं होते मगर.........

ऑपरेशन सिंदूर : आतंकवाद विरोधी कदम

सुमित कुमार
वरिष्ठ तकनीकी सहायक– बी

प्रस्तावना

आतंकवाद किसी भी देश की सुरक्षा और आम लोगो की जिंदगी के लिए बड़ा खतरा है। जब आतंकी हमले होते हैं, तो न केवल जान-माल का नुकसान होता है, बल्कि लोगों में डर फैल जाता है। ऐसे समय में सरकार सुरक्षा बलों की जिम्मेंदारी होती है कि वे जल्दी और सही कदम उठाएं ताकि आतंकवादियों को सबक मिले और आम जनता सुरक्षित हो सके। ऑपरेशन सिंदूर इसी तरह की कार्यवाही है।

पृष्ठभूमि

अप्रैल 2025 मे पहलगाम (जम्मू-कश्मीर) में आतंकवादियों द्वारा हमला हुआ जिसमें 26 नागरिकों की आतंकवादियों ने निर्मम हत्या की। इस हमले के जवाब में भारत सरकार ने आतंकवादियों के ठिकानों पर सटीक कार्यवाही करने का निर्णय लिया।

समय और जगह

1. ऑपरेशन 7 मई 2025 की रात को हुआ।
2. इसके अतर्गत आठ से नौ आतंकवादी शिविरों को निशाना बनाया गया, पाकिस्तान और पाकिस्तान के नियंत्रण वाले क्षेत्र में।

परिणाम

1. लगभग 80-100 आतंकवादी मारे गए
2. कई आतंकवादी शिविर नष्ट हुए
3. भारत की सैनिक क्षमता, कूटनीतिक सक्रियता और मानवीय प्रतिबद्धता अंतरराष्ट्रीय मंच पर उजागर किए गए।
4. इस कार्यवाही को सरकार ने प्रत्युत्तर की कार्यवाही कहा, जिसे आतंकवादियों और उनके समर्थकों को संदेश भेजनें के उद्देश्य से किया गया।

ऑपरेशन सिंदूर का महत्व

1. यह साबित करता है कि भारत आतंकवाद के खिलाफ चुप नहीं बैठेगा, जो हमले करेगा, उसका जवाब मिलेगा।
2. आतंकी संरचनाओं को कमजोर करने से भविष्य में हमलों की आशंका कम होती है।
3. देश के सुरक्षा बलों और खूफिया एजेसिंयों की तत्परता और जिम्मेदारी सामने आयी।
4. आतंकवादियों के पीछे पड़े आतंक पोषक नेटवर्कों को चुनौती मिली।

चुनौतियां और चिंताएं

1. ऐसे ऑपरेशन से परिस्थितिजन्य तथा मानवीय दुष्प्रभाव हो सकते हैं यदि लक्षित हमलों में आम जनता प्रभावित हो।
2. आतंकवादी गतिविधियाँ फिर से शुरू हो सकती हैं (पहले से अधिक) इसीलिए सतत निगरानी और गंभीर खूफिया काम जरूरी है।
3. ऑपरेशन के बाद प्रभावित इलाकों मे पुनर्स्थापना और विश्वास बहाल करना एक बड़ी जिम्मेदारी है।

निष्कर्षः

ऑपरेशन सिंदूर एक महत्वपूर्ण और साहसिक कदम है जो दिखाता है कि भारत आतंकवादियों को चाहे कहीं भी हो, नही छोड़ता। इस प्रकार की कार्यवाही से न सिर्फ हमलों का जबाव मिलता है बल्कि आतंकवाद फैलाने वालों को यह संदेश भी जाता है कि उनके लिए सुरक्षित आश्रय नहीं होगा। साथ ही सुरक्षा क्षेत्र, नीति निर्माण, और खूफिया तंत्र की मजबूती की जरूरत को भी दर्शाता है।

"सिंदूर सा लाल है हर शहीद का बलिदान,

आतंक के अंधेरों को कर देंगे हम सूनसान"

"आतंक की जड़ों को हर हाल में मिटाएंगे,

शांति और अमन का परचम लहराएंगे"

गौतम बुद्ध एवं उनके अनमोल वचन

जय प्रकाश
तकनीकी अधिकारी – ए

गौतम बुद्ध का संक्षिप्त परिचय

गौतम बुद्ध (563 ईसा पूर्व – 483 ईसा पूर्व) बौद्ध धर्म के प्रवर्तक और महान आध्यात्मिक गुरु थे। उनका वास्तविक नाम सिद्धार्थ गौतम था। उनका जन्म लुम्बिनी (वर्तमान नेपाल) में शाक्य वंश के राजा शुद्धोधन और माता मायादेवी के यहाँ हुआ था। सिद्धार्थ बचपन से ही करुणाशील और चिंतनशील स्वभाव के थे। 29 वर्ष की आयु में उन्होंने दुःख, रोग, बुढ़ापा और मृत्यु का दर्शन कर जीवन की अस्थिरता को समझा। इसके बाद उन्होंने राजमहल त्यागकर सत्य की खोज में संन्यास ग्रहण किया। कठोर तपस्या और गहन ध्यान के बाद उन्हें बोधगया में बोधिवृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ और वे 'बुद्ध' कहलाए। उन्होंने मध्यम मार्ग, अहिंसा, करुणा, मैत्री और सत्य का उपदेश दिया। उनका संदेश था कि मानव अपने सत्कर्मों और आत्मज्ञान से मोक्ष प्राप्त कर सकता है। गौतम बुद्ध ने अपना शेष जीवन धर्मचक्र प्रवर्तन और जनकल्याण में बिताया। 80 वर्ष की आयु में कुशीनगर (उत्तर प्रदेश) में उनका महापरिनिर्वाण हुआ। गौतम बुद्ध एक महान दार्शनिक, करुणामयी शिक्षक और शांति के संदेशवाहक थे, जिनकी शिक्षा आज भी मानवता को मार्गदर्शन देती है।

गौतम बुद्ध के अनमोल वचन

सत्य और विचार

1. मनुष्य वही बनता है, जो वह सोचता है।
2. तीन चीजें अधिक देर तक छुप नहीं सकतीं – सूरज, चाँद और सत्य।
3. मन ही सब कुछ है, इसे पवित्र बनाओ।

करुणा और प्रेम

4. घृणा कभी घृणा से नहीं मिटती, केवल प्रेम से मिटती है।
5. दूसरों के लिए वही करो जो तुम अपने लिए चाहते हो।
6. प्रेम और करुणा से ही संसार में शांति आ सकती है।

आत्म-नियंत्रण और धैर्य

7. स्वयं पर विजय प्राप्त करना हजार युद्ध जीतने से बेहतर है।
8. क्रोध को पकड़ कर रखना जलते अंगारे को पकड़ने जैसा है।
9. धैर्य सबसे बड़ा तप है।

वर्तमान और जीवन-दर्शन

10. अतीत में मत उलझो, भविष्य के सपनों में मत खोओ, वर्तमान क्षण पर ध्यान दो।
11. हर सुबह हम दोबारा जन्म लेते हैं, आज हम क्या करते हैं वही सबसे महत्वपूर्ण है।
12. शांति भीतर से आती है, उसे बाहर मत खोजो।

ज्ञान और मार्ग

13. अज्ञान अंधकार है, ज्ञान प्रकाश है।
14. कोई और तुम्हें नहीं बचा सकता, तुम्हें स्वयं अपना मार्ग चलना होगा।
15. सत्य का मार्ग दिखाया जा सकता है, लेकिन चलना तुम्हें ही होगा।

स्वास्थ्य और संतोष

16. स्वास्थ्य सबसे बड़ा उपहार है, संतोष सबसे बड़ा धन है।
17. कम में संतोष ही सबसे बड़ी संपत्ति है।
18. भौतिक वस्तुएँ सुख नहीं देतीं, सच्चा सुख भीतर से आता है।

अन्य महत्वपूर्ण वचन

19. हजार खाली शब्दों से एक सार्थक शब्द अच्छा है।
20. किसी को भी अधिक समय तक धोखा नहीं दिया जा सकता।
21. अच्छे कर्म करो, क्योंकि वही तुम्हारा भविष्य बनाते हैं।

नौकरी: संघर्ष से सफलता तक की यात्रा

ममता
प्रशासनिक सहायक – ए

मानव जीवन निरंतर संघर्ष और प्रयत्नों का नाम है। पढ़ाई-लिखाई पूरी करने के बाद हर युवा का सपना होता है कि उसे एक अच्छी नौकरी मिले, ताकि वह आत्मनिर्भर बन सके और अपने परिवार का सहारा बन सके। नौकरी से पहले और नौकरी लगने के बाद की भावनाएँ बिल्कुल अलग होती हैं, लेकिन दोनों जीवन के महत्वपूर्ण अनुभव का हिस्सा हैं।

नौकरी से पहले की भावनाएँ:

नौकरी मिलने से पहले का समय चुनौतियों और संघर्ष से भरा होता है। पढ़ाई पूरी होने के बाद मन उत्साहित रहता है और चिंतित भी। उत्साह इसलिए कि अब अपने सपनों को पूरा करने का अवसर मिलेगा, और चिंता, इसलिए कि पता नहीं नौकरी मिलेगी भी या नहीं।

प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते समय मन में एक अजीब सी बेचैनी रहती है। बार-बार यही विचार आता है कि क्या मैं सफल हो पाऊँगी? परिवार और समाज की अपेक्षाएँ भी दबाव को और बढ़ा देती हैं। कई बार असफलता मिलने पर निराशा होती है, लेकिन अंदर से उम्मींद की किरण बार-बार प्रयास करने की प्रेरणा देती रहती है।

इस दौर में आत्मविश्वास और धैर्य की सबसे बड़ी परीक्षा होती है। युवा को अपनी मेहनत, त्याग और लगन पर भरोसा रखना पड़ता है। इस समय मन में एक सपना होता है – अपने परिवार को खुशियाँ देने का और खुद को साबित करने का।

नौकरी मिलने के बाद की भावनाएँ:

जब लंबे संघर्ष और प्रयासों के बाद नौकरी मिलने की खबर मिलती है, तो उस समय की खुशी शब्दों में व्यक्त करना मुश्किल होता है। यह पल जीवन के सबसे सुखद पलों में से एक होता है। मन में गर्व की अनुभूति होती है कि मेहनत रंग लाई।

परिवार वालों के चेहरे पर मुस्कान और आँखों में खुशी के आँसू देखकर आत्मा तक तृप्त हो जाती है। माता-पिता को लगता है कि उनकी मेहनत सफल हुई। रिश्तेदार और मित्र बधाई देने लगते हैं, आत्मविश्वास और भी बढ़ जाता है। नौकरी लगने के बाद जीवन में नई जिम्मेदारियों का आरंभ होता है। अब केवल पढ़ाई या परीक्षा तक सीमित नहीं रहना, बल्कि वास्तविक जीवन के अनुभवों का सामना करना पड़ता है। आत्मनिर्भर बनने की भावना के साथ भविष्य के नए सपने भी जन्म लेते हैं। कभी-कभी खुद को कहने की इच्छा होती है।

''चलो आज अपनी ही पीठ थपथपा लो,

अंतर्मन में कितनी ही लड़ाईयाँ लड़ीं... और हर परिस्थितियों को

कितनी खूबसूरती से संभाला तुमने।''

निष्कर्ष:

नौकरी से पहले की घबराहट, बेचैनी और आशंका जब सफलता में बदलती है, तो वही खुशी जीवन की सबसे अनमोल धरोहर बन जाती है। यह हमें सिखाती है कि संघर्ष किए बिना सफलता का स्वाद अधूरा है। नौकरी लगने से पहले की चिंता और नौकरी लगने के बाद की संतुष्टि, दोनों ही जीवन के अमूल्य अनुभव हैं, जो हमें और मजबूत तथा जिम्मेदार बनाते हैं।

''हिंदी भारत की पहचान है।''

– अटल बिहारी बाजपेयी

''हिंदी हमारी आन-बान-शान''

– अंकित शुक्ला

‘आनंद का नगर’ कोलकाता

शिल्पी बिश्वास
तकनीशियन-बी

कोलकाता को ‘आनंद का नगर’ या ‘आनंद का शहर’ कहा जाता है। यह वर्तमान में पश्चिम बंगाल की राजधानी है। यह हुगली नदी के तट पर बसा हुआ है। कोलकाता न केवल बंगाल का, बल्कि पूरे भारत का एक प्रमुख सांस्कृतिक और व्यापारिक केंद्र है, कोलकाता अपनी संस्कृति, साहित्य, कला, संगीत, नृत्य, नाटक और ऐतिहासिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है।

कोलकाता को ‘आनंद का नगर’ नाम मिलने के कारण यहाँ की जीवनशैली और लोगों की आत्मीयता है, चाहे त्योहार हो, साहित्यिक गोष्ठियाँ हों, दुर्गा पूजा का भव्य आयोजन हो या फिर फुटबाल और क्रिकेट का जुनून हर जगह एक विशेष प्रकार का उत्साह देखने को मिलता है। यहाँ के लोग सरल, मददगार और जिंदादिल माने जाते हैं। चाहे दुर्गा पूजा का आयोजन हो, काली पूजा, रथ यात्रा या सरस्वती पूजा हर त्योहार यहाँ बड़े उत्साह और आनंद से मनाया जाता है। दुर्गा पूजा के समय तो पूरा शहर रोशनी से जगमगा उठता है और चारों ओर संगीत, नृत्य और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम रहती है।

कोलकाता का ऐतिहासिक महत्व अत्यधिक है। ब्रिटिश शासनकाल में यह शहर लंबे समय तक भारत की राजधानी रहा। इस दौरान यहाँ शिक्षा, उद्योग, साहित्य और प्रशासन का तेजी से विकास हुआ। कोलकाता को उस समय ‘‘भारत का प्रवेश द्वार’’ भी कहा जाता था। यहाँ की गलियों में आज भी उपनिवेश काल की इमारतें, पुरानी हवेलियाँ और ऐतिहासिक धरोहरें दिखाई देती हैं, जो इसके गौरवशाली अतीत की गवाही देती हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से कोलकाता को भारत की ‘सांस्कृतिक राजधानी’ कहा जाता है। यहाँ साहित्य, कला और नाट्यकला का गहरा प्रभाव है। नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ ठाकुर की रचनाएँ, सत्यजीत रे की फिल्में और बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय की साहित्यिक कृतियाँ इस शहर की पहचान हैं। यहाँ हर वर्ष पुस्तक मेले, नाट्य उत्सव, संगीत समारोह और कला प्रदर्शनियाँ आयोजित की जाती हैं, जिसमें देश-विदेश के कलाकार और साहित्यकार भाग लेते हैं।

यह शहर विशेषकर फुटबाल और क्रिकेट के लिए प्रसिद्ध है। साल्ट लेक स्टेडियम एशिया के सबसे बड़े स्टेडियमों में से एक है, यहाँ के लोग खेलों को पूरे जुनून और आनंद के साथ जीते हैं।

पर्यटन की दृष्टि से भी कोलकाता अत्यंत महत्वपूर्ण है। हावड़ा ब्रिज, विक्टोरिया मेमोरियल, भारतीय संग्रहालय, मार्बल पैलेस, दक्षिणेश्वर काली मंदिर, कालीघाट, काली मंदिर और बेल्लूर मठ जैसे स्थल यहाँ की शान हैं। इसके अलावा साइंस सिटी, अलीपुर, चिड़ियाघर आदि भी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

आधुनिक युग में भी कोलकाता अपनी परंपराओं और सांस्कृतिक धरोहर को संजोए है। यहाँ की चाय की टपरी पर होने वाली ‘‘अड्डाबाजी’’, हाथ-रिक्शा की सवारी, ट्राम गाड़ी, वर्तमान हुगली नदी के नीचे से मेट्रो रेल और गलियों में बजती हुई संगीत की धुनें इसे अन्य महानगरों से अलग बनाती हैं।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कोलकाता केवल ईमारतों और सड़कों का शहर नहीं, बल्कि यह लोगों की भावनाओं, संस्कृति, साहित्य और आनंद का प्रतीक है। यही कारण है कि इसे 'आनंद का शहर' कहा जाता है।

''हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा बन सकती है।''

– बाल गंगाधर तिलक

''हिंदी का स्थान भारत में वही है जो शरीर में आत्मा का होता है।''

– विनोबा भावे

भाषा की संरचना, स्वरुप एवं लक्षण

सचिन
तकनीकी अधिकारी – बी

भाषा शब्द संस्कृत की 'भाष' धातु से बना है। भाषा का अर्थ है बोलना या कहना अर्थात भाषा वह है जिसे बोला जाए। बोलते तो संसार के प्राय: सभी प्राणी हैं। प्रत्येक जीव विचारों एवं भावों के आदान – प्रदान हेतु करते हैं परन्तु हम उनको विचार-विनिमय की भाषा नहीं कहते हैं। उनकी भाषा सांकेतिक होती है जबकि मानव की भाषा का स्वरूप केवल सांकेतिक न होकर लिखित है।

'इस प्रकार मनुष्यों में भावों और विचारों की अभिव्यक्ति के ध्वनि-प्रतीकमय साधन को भाषा कहते हैं'

पहले मानव संकेतों के माध्यम से काम चलाता होगा। समय के साथ मानव की अभिव्यक्ति क्षमता बढ़ती गई और भाषा का परिष्कार होता गया। इस प्रकार भाषा को पारिभाषित किया जा सकता है। "मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान-प्रदान करने के लिए व्यक्ति ध्वनि संकेतों का जो व्यवहार होता है, उसे भाषा कहते हैं" भाषा के स्वरूप अनेक हैं, भाषा के स्वरूप को भी पारिभाषित कर सकते हैं जैसे "वह साधन जिसके द्वारा एक प्राणी दूसरे प्राणी पर अपने विचार, भाव या अपनी इच्छा प्रकट करता है।" भाषा विज्ञान की दृष्टी से मानव द्वारा उच्चारित समस्त ध्वनियाँ भाषा की परिधि में नहीं आती हैं। जैसे पशुओं को हाँकते समय और कठिन परिश्रम करते समय मनुष्य ऐसी ध्वनियाँ निकालता है। उदाहरण के लिए हट्ट् र् र्..., ह् ह् ह्.. हा हा हा.., आहहह इत्यादि ध्वनि निरर्थक है। उन्हीं ध्वनियों को भाषा का अंग माना जा सकता है जो सार्थक शब्द के निर्माण में सहायक होती हैं।

ऐसा माध्यम जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार, भावनाएँ और अनुभव दूसरों तक पहुँचाता है, भाषा कहलाती है। भाषा के अभाव में मनुष्य संकेतों के द्वारा ही अपने विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति कर सकता है। ये ध्वनियाँ ही भाषा के अंतर्गत आती हैं जो सार्थक होती हैं। भाषा के अंतर्गत आने वाली ध्वनियों का अर्थ परम्परागत होता है। भाषा व्यक्ति और समाज को जोड़ने वाली महत्वपूर्ण कड़ी है।

भाषा मनुष्य को पैतृक सम्पत्ति के रूप में जन्म से ही नहीं प्राप्त होती है, यदि किसी अंग्रेज के बच्चे का पालन-पोषण हिंदी भाषी माता-पिता करें तो वह बच्चा हिंदी भाषी होगा। भाषा परिवर्तनशील है, सदैव बदलती रहती है। भाषा का कोई स्थिर या अंतिम स्वरूप नहीं है। भाषा में यह परिवर्तन ध्वनि, शब्द, वाक्य अर्थ सभी स्तरों पर होता है। भाषा एक सामाजिक क्रिया है, वह किसी व्यक्ति विशेष की कृति नहीं है। भाषा के मुख्य चार स्तंभ हैं: वक्ता, श्रोता, शब्द और अर्थ। इन चारों में समन्वय बनाना ही भाषा है।

संघर्ष और सफलता

नीरज कुमार बरनवाल
तकनीकी अधिकारी - ए

संघर्ष की राहों पर चलता रहा,
हर ठोकर में मैं संभलता रहा।
अंधेरी रातों में दीप जलाता,
टूटे सपनों को फिर से सजाता।
पसीनें की हर बूँद गवाही देती,
मेरी मेहनत ही मेरी सेती।
रुकावटें आईं, डर भी सताया,
पर हिम्मत ने हर डर को हराया।
पथरीली डगर पे चलता गया,
हर घाव से मैं और कठोर हुआ।
थकान ने तब भी रोका कदम,
सपनों ने दिया जब हौसलों को दम।
आँधियों में दीपक जब बुझने लगा,
इरादों का सूरज तभी जगमगाया।
संघर्ष ही मेरे जीवन की पहचान,
उससे ही पाई मैंने नई जान।
संघर्ष बिना जीवन अधूरा है,
सफलता का स्वाद संघर्ष के बाद ही पूरा है।

स्वच्छता

मोनु कुमार
भण्डार सहायक – ए

प्रस्तावना : साफ-सफाई हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। यह हमारे जीवन की प्राथमिकता भी है। स्वच्छता जरूरी है क्योंकि साफ-सफाई से हम जीवन में आने वाली कई परेशानियों से मुक्ति पा सकते हैं।

स्वच्छता का अर्थ है सफाई से रहने की आदत। सफाई से रहने से जहां शरीर स्वस्थ रहता है, वहीं स्वच्छता तन और मन दोनों की खुशी के लिए आवश्यक है। स्वच्छता को सभी लोगों को अपनी दिनचर्या में अवश्य ही शामिल करना चाहिए।

महात्मा गांधी ने कहा था कि -'स्वच्छता ही सेवा है। हमारे देश के लिए, हमारे जीवन में स्वच्छता की बहुत जरूरत है। गंदगी हमारे आसपास के वातावरण और जीवन को प्रभावित करती है। हमें व्यक्तिगत व आसपास भी सफाई अवश्य रखनी चाहिए और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करना चाहिए।

स्वच्छता का महत्व : अभी कोरोना काल में रोगियों की बढ़ती जनसंख्या एवं अस्पतालों में साफ-सफाई को ध्यान देने की आवश्यकता से यह बात और भी स्पष्ट हो गई है कि जीवन में स्वच्छता की कितनी जरूरत है।

जीवन में स्वच्छता से तात्पर्य स्वस्थ होने की अवस्था से भी है। स्वच्छता एक अच्छी आदत है जो हमारे जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाती है। यह हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। हमारे लिए शरीर की भी स्वच्छता बहुत जरूरी है, जैसे रोज नहाना, स्वच्छ कपड़े पहनना, दांतों की सफाई करना, नाखून काटना, आदि। इसके लिए हमें प्रतिदिन सुबह जैसे ही हम सोकर उठते हैं, अपने दांतों को साफ करना चाहिए। चेहरा, हाथ पैर धोना चाहिए। साथ ही स्नानादि और दैनिक क्रियाओं को समय पर पूर्ण करना चाहिए।

स्वस्थ रहना और शांति से जीवन जीना एक अच्छा गुण है। इसके लिए घर के बड़े-बुजुर्गों और माता-पिता को अपने बच्चों में इस आदत को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि वे स्वच्छता के महत्व को समझें।

स्वच्छ भारत अभियान: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा स्वच्छ भारत अभियान 2 अक्तूबर 2014 को महात्मा गांधी की 145वीं जयंती पर चलाया गया एक महत्वपूर्ण अभियान है। यह अभियान नई दिल्ली के राजघाट से शुरू किया गया था। यह एक राष्ट्रीय स्तर का अभियान है और भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा है। स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत कई योजनाएं शामिल की गई हैं, जिसमें ग्रामीणों के घरों में शौचालाय निर्माण प्रमुख हैं, जिससे लोग आस-पास की स्वच्छता का महत्व समझेंगे और वातावरण को स्वच्छ रखेंगे।

प्लास्टिक बंद और वृक्षारोपण : प्लास्टिक मानव जीवन में लगातार ज़हर घोल रहा है। मानव सुबह से लेकर शाम तक प्लास्टिक का उपयोग करता है जिससे मानव वरदान की तरह समझता है, दरअसल, वह पर्यावरण, पशु और हम सभी के लिए बहुत घातक है। प्रकृति में संतुलन बनाए रखने के लिए तथा आसपास के वातावरण को स्वच्छ बनाए रखने के लिए पेड़-पौधे लगाना बहुत ही आवश्यक है। अतः प्लास्टिक बंद का आह्वान कर कई कड़े कानून बनाए गए। यह भी स्वच्छता के प्रति एक अच्छा सराहनीय कदम है। वातावरण को स्वच्छ रखने के लिए अधिक से अधिक पौधे लगाने चाहिए।

गंदगी से कई तरह की बीमारियां पैदा होती हैं, जो मानव के विकास में बाधा डालती हैं। अतः स्वच्छता हमारे जीवन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। स्वच्छता को अपनाकर ही हम बीमारियों को खत्म कर सकते हैं। हमें अपने घर के अलावा आसपास की स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए।

स्वच्छता को बनाए रखने के लिए हमें इधर-उधर कचरा नहीं रखना चाहिए। कचरा हमेशा कूड़ेदान में ही फेंकना चाहिए। कहा भी गया है कि स्वच्छता में ईश्वर का वास होता है। अतः स्वच्छता को अपनाएं और देश को आगे बढ़ाएं। बेहतर साफ-सफाई से ही भारत के गाँव को आदर्श बनाया जा सकता है। स्वच्छता के लिए दूसरों को भी प्रेरित करें।

"हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है, यह हमारे हृदय की वाणी है।"

– मैथिलीशरण गुप्त

"हिंदी पढ़ना और पढ़ाना हमारा कर्तव्य है। उसे हम सबको अपनाना है।"

– लाल बहादुर शास्त्री

"राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है।"

– बालकृष्ण शर्मा नवीन

भारतीय संस्कृति और उसका महत्व

अंकित
प्रशासनिक सहायक-ए

भारत विभिन्न संस्कृतियों का देश है। भारत की संस्कृति दुनिया की सबसे पुरानी संस्कृति है। जिसे लगभग 5000 वर्ष प्राचीन माना जाता है। भारतीय संस्कृति पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है।

सभ्यता को शरीर एवं संस्कृति को आत्मा माना जाता है। ये एक दूसरे के पूरक होते हैं। संस्कृति इस समाज को सभ्य बनाती है। किसी भी देश के आदर्श व जीवनयापन का तरीका ही उसकी संस्कृति है। भारतीय संस्कृति युवाओं को समाज की जिम्मेदारी सौंपने की परंपरा को बनाए रखती है। जो जीवन की चुनौतियों का सामना करने की शक्ति देती है। यह संस्कृति इतिहास और विरासत के ज्ञान को प्रदर्शित करती है। भारतीय संस्कृति समाज और देश के प्रति जिम्मेदारी की भावना को सिखाती है। जो मानवता और सहानुभूति की भावना को बढ़ावा देता है। भारतीय संस्कृति अध्यात्म और धर्म के महत्व को दर्शाती है। भारतीय संस्कृति जीवन के मूल्यों को समझने और उनका पालन करने की शिक्षा देती है। हमारी संस्कृति एकता, शांति और सहयोग का संदेश देती है। यह संस्कृति हमें अपनी जड़ों से जोड़ती है।

संस्कृति का महत्व

भारतीय संस्कृति ने लोगों को कम से कम हिंसा के साथ शांति और सद्भाव से रहना सिखाया। हमारी संस्कृति को कई देशों में मान्यता मिली है। लोग अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए भारतीय मूल्यों और नैतिकता को अपना रहे हैं। पूरे विश्व में भारत अपनी संस्कृति और परंपरा के लिए प्रसिद्ध देश है। ये विभिन्न संस्कृति और परंपरा की भूमि है। भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यता का देश है। भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण तत्व अच्छे शिष्टाचारी, तहजीब, सभ्य संवाद, धार्मिक संस्कार, मान्यताएं और मूल्य आदि हैं। वर्तमान में, जब सब की जीवन शैली आधुनिक हो रही है, भारतीय लोग आज भी अपनी परंपरा और मूल्यों को बनाए हुए हैं। विभिन्न संस्कृति और परंपरा के लोगों के बीच की घनिष्ठता ने एक अनोखा देश भारत बनाया है। अपनी संस्कृति और परंपरा का अनुसरण करते हुए भारत के लोग शांतिपूर्ण तरीके से जीवन जी रहे हैं। विश्व इतिहास में यह देखा गया है कि यूनान, मिस्त्र, और रोम की सभ्यता तथा संस्कृति सबसे अधिक पुरानी और प्रभावशाली रहीं थीं। काल के दुष्चक्र से ये संस्कृतियां ऐसी नेस्तानाबूत हुईं कि इनका आज नामोनिशान तक नहीं मिलता।

इसके विपरित भारतीय संस्कृति आज भी ज्यों का त्यों बनी हुई है। इस विषय पर किसी शायर का कहना है कि सभी संस्कृतियों में श्रेष्ठ यूनान, मिस्र और रोम की सभ्यता और संस्कृति आज मिट चुकी हैं, किन्तु हमारी आज भी विद्यमान है। हमारी संस्कृति को मिटाने के लिए अनेक बार विदेशी आक्रमण होते रहे हैं। लेकिन यह नहीं मिट पाई है। संस्कृति समाज का रचनात्मक विकास करती है। यह हमें हमारा अस्तित्व प्रदान करती है।

भारतीय संस्कृति की विशेषताएं

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन व समृद्ध संस्कृति है। भारतीय संस्कृति काफी उदार संस्कृतियों में से एक है। भारत की संस्कृति में वर्णाश्रम व्यवस्था भी पाई जाती है। हमारी संस्कृति समानता रखने वाली संस्कृति है। भारतीय संस्कृति पूरे विश्व को एक परिवार के रूप में मानती है। यह संस्कृति प्रकृति प्रेमी संस्कृति रही है। 'अनेकता में एकता' हमारी संस्कृति की पहचान है। भारत विभिन्न धर्मों, भाषाओं, जातियों और परंपराओं का संगम है। इतनी विविधता होने के बावजूद यहां शांति और समरसता का वातावरण है। संस्कार और पारिवारिक मूल्यों को अत्यधिक महत्व दिया जाता है जिसमें बड़ों का सम्मान, परिवार के प्रति कर्तव्य और बच्चों के प्रति स्नेह प्रमुख हैं। शास्त्रीय कला और साहित्य का एक महत्वपूर्ण अंग शास्त्रीय संगीत, नृत्य, कला और संस्कृत साहित्य है, जिसमें वेद, उपनिषद, रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथ शामिल हैं। योग और आयुर्वेद जैसी प्राचीन भारतीय विधाओं ने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए दुनिया को एक महत्वपूर्ण साधन दिया है। हमारी संस्कृति में सहिष्णुता और समरसता को बहुत महत्व दिया जाता है जहां विभिन्न संस्कृतियों और विचारों का सम्मान किया जाता है। भारत ने विज्ञान, गणित और ज्ञान के अन्य क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है जो इसकी गौरवशाली इतिहास का हिस्सा है।

भारत की संस्कृति

भाषा, धर्म और पंथ - भारत की राष्ट्रीय भाषा हिन्दी है। हालांकि विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में लगभग 22 आधिकारिक भाषाएं और 400 दूसरी भाषाएं प्रतिदिन बोली जाती हैं। इतिहास के अनुसार हिन्दू और बुद्ध धर्म जैसे धर्मों की जन्मस्थली के रूप में भारत को पहचाना जाता है। भारत की अधिकांश जनसंख्या हिन्दू धर्म से संबंध रखती है। वेशभूषा और खान-पान में यहाँ विभिन्नताएँ हैं। भारत अधिक जनसंख्या के साथ एक बड़ा देश है, जहां विभिन्न धर्मों के लोग अपनी अनोखी संस्कृति के साथ एक साथ रहते है। देश के कुछ मुख्य धर्म हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन और यहूदी हैं। आमतौर पर यहां के लोग वेशभूषा, सामाजिक मान्यताओं, प्रथा और खानें की आदतों में भिन्न होते हैं। पर्व और जयंतियां व विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों सहित हम कुछ राष्ट्रीय उत्सवों को एकसाथ मनाते हैं जैसे गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, गांधी जयंती आदि। आपसी समरसता के साथ लोग खुशी और उत्साह के साथ देश के विभिन्न भागों में विभिन्न धर्मों के लोग अपने त्योहारों को मनाते हैं।

उपसंहार

भारत की संस्कृति एक महान संस्कृति है। यहां पर योग व अध्यात्म पर विश्वास का बहुत महत्व है। भारत की संस्कृति में लोग पूजा-पाठ व व्रतों में विश्वास रखते हैं। कुछ कार्यक्रम जैसे- बुद्ध पूर्णिमा, महावीर जयंती, गुरु पर्व आदि कई धर्मों के लोगों द्वारा एक साथ मनाया जाता है। भारत अपने विभिन्न सांस्कृतिक नृत्यों जैसे- शास्त्रीय (भरत नाट्यम, कथककली, कुच्ची पुड़ी) और अपने क्षेत्रों के लोक नृत्यों के अनुसार बहुत प्रसिद्ध है। पंजाबी भांगड़ा करते हैं। गुजराती गरबा करते हैं। राजस्थानी घुमर करते हैं। भारतीय संस्कृति मानवतावादी संस्कृति है। हमें हमारी संस्कृति का सम्मान करना चाहिए और इसे अपनाना चाहिए और भविष्य में आने वाली पीढ़ियों को भी इससे अवगत कराना चाहिए।

मेरे गाँव की यादें

आशीष अरुण नौकरकर
तकनीशियन – बी

मेरा गाँव 'हीवरा (हीवरी)' छोटा सा है, यह महाराष्ट्र राज्य के नागपुर जिले के रामटेक तालुका में स्थित है। यह मेरे दिल के बहुत करीब है। हर गली, हर पेड़ और हर खेत से मेरी यादें जुड़ी हैं। जब भी बारिश होती है, मुझे अपने गाँव की मिट्टी की खुशबू याद आती है और ऐसा लगता है कि मैं फिर से अपने बचपन में पहुँच गया हूँ। शहर में रहते हुए भी मेरा मन अक्सर गाँव की गलियों में घूमने लगता है। गाँव का प्राकृतिक सौंदर्य, वहाँ का सादा जीवन और लोगों का अपनापन मुझे हमेशा आकर्षित करता है।

गाँव का प्राकृतिक सौंदर्य:-

गाँव की सुबह का दृश्य सचमुच मन को मोह लेता है। सूरज की पहली किरण खेतों पर पड़ते ही पूरा गाँव सुनहरी रोशनी से चमक उठता है। मुर्गे की आवाज और पक्षियों की चहचहाहट सुबह के अलार्म घड़ी का काम करती है। खेतों में हल जोतते बैल और मेहनत करते किसान गाँव के असली नायक कहलाते हैं। चारों ओर फैली हरियाली मन को शांति देती है। गाँव के पास एक बड़ा तालाब है, जिसकी लहरों पर सूर्य की किरणें पड़ते ही पानी सोने की तरह चमकने लगता है। बरसात के मौसम में तालाब लबालब भर जाता है और आस-पास का दृश्य किसी चित्रकार की पेंटिंग जैसा लगता है।

गाँव का जीवन और लोग:-

गाँव का जीवन बहुत सरल और सादा होता है। लोग एक-दूसरे से प्रेम से मिलते हैं। किसी के घर शादी हो या कोई त्योहार, पूरा गाँव उसमें शामिल होता है। त्योहारों के समय गाँव की रौनक देखते ही बनती है। होली के रंग, दीवाली के दीपक और मकर संक्रांति की पतंगें गाँव को उत्सव का रूप दे देती हैं। फसल कटाई के समय खेतों में लोकगीत गाए जाते हैं, जिससे पूरा वातावरण खुशियों से भर जाता है।

बचपन की यादें:-

मेरे बचपन की सबसे सुंदर यादें गाँव से जुड़ी हैं। मैं अपने दोस्तों के साथ खेतों में दौड़ लगाता था। गाँव का प्राथमिक स्कूल भले ही छोटा था, लेकिन वहाँ के शिक्षक हमें प्यार से पढ़ाते थे। दोपहर के समय हम पेड़ के नीचे बैठकर पढ़ाई करते थे। कभी-कभी छुट्टी के बाद हम खेतों से ताजे फूल और सब्जियाँ तोड़कर घर लाते थे। त्योहारों पर गाँव में लगने वाले मेले का हमें बेसब्री से इंतजार रहता था। वहाँ झूले झूलना, खिलौने खरीदना और मिठाइयाँ खाना हमें बहुत अच्छा लगता था।

गाँव की परंपराएँ और संस्कृति:-

मेरे गाँव में कई पुरानी परंपराएँ आज भी जीवित हैं। हर साल सावन के महीने में विशेष पूजा होती है। नवरात्रि में गरबा और रामलीला का आयोजन किया जाता है। लोग दूर-दूर से इन कार्यक्रमों को देखने आते हैं। इन सब आयोजनों से गाँव में एकता और भाईचारा बढ़ता है।

गाँव की खासियत:-

मेरे गाँव की सबसे खास बात वहाँ के लोग हैं। वे भले ही साधारण जीवन जीते हैं, लेकिन दिल के बहुत बड़े होते हैं। अतिथि का स्वागत वे पूरे दिल से करते हैं। अगर गाँव में कोई परेशानी आ जाए तो सब लोग मिलकर उसका हल निकालते हैं। यही आपसी सहयोग गाँव को और सुंदर बनाता है।

गाँव से दूर रहने का अनुभव:-

वर्तमान में मैं शहर में नौकरी करता हूँ। यहाँ का जीवन तेज और व्यस्त है। ऊँची-ऊँची इमारतों और मशीनों की आवाज के बीच कभी-कभी मन घुटने लगता है। ऐसे समय में मुझे अपने गाँव की ताजी हवा, मिट्टी की खुशबू और चिड़ियों की आवाज याद आती है। मैं छुट्टियों का इंतजार करता हूँ ताकि कुछ दिन गाँव जाकर वहाँ का सुकून महसूस कर सकूँ।

निष्कर्ष:

गाँव की यादें मेरे जीवन की सबसे मूल्यवान पूँजी हैं। वहाँ का हर पल मुझे खुशी देता है। मेरा सपना है कि मैं बड़ा आदमी बनकर अपने गाँव की तरक्की में योगदान दूँ, ताकि वहाँ के बच्चे भी अच्छी शिक्षा और सुविधाएँ पा सकें। गाँव केवल रहने की जगह नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति और परंपरा का आधार है। इसलिए कहा जाता है- **''भारत की आत्मा उसके गाँवों में बसती है।''**

''हिंदी के द्वारा ही हम भारत की संस्कृति और सभ्यता को सुरक्षित रख सकते हैं।''

– डॉ.राजेंद्र प्रसाद

''मैं दुनियां की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ, पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, ये मैं सह नहीं सकता।''

– आचार्य विनोबा भावे

सोशल मीडिया और युवा: एक गहरा प्रभाव

पाझारे निरज शंकर राव
प्रशासनिक सहायक - ए

आज के दौर में सोशल मीडिया हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुका है, खासकर युवाओं के लिए। यह एक ऐसा मंच है जहाँ विचारों का आदान-प्रदान होता है, दोस्त बनाने हों या दुनियादारी की जानकारी सबकुछ केवल एक क्लिक में हमें उपलब्ध हो जाती है। ये चीजें युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य, रिश्तों और सामाजिक मानदंडों को प्रभावित कर रहे हैं।

सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव (Pros):

सोशल मीडिया ने दुनिया को एक छोटा गाँव बना दिया है। यह युवाओं को कई तरह से सशक्त करता है।

- **जुड़ाव और संचार:** यह दोस्तों और परिवार से जुड़े रहने का एक आसान तरीका है, खासकर जब वे दूर रहते हों।
- **शिक्षा और जानकारी:** सोशल मीडिया पर शैक्षिक सामग्री समाचार और विभिन्न विषयों पर जानकारी आसानी से उपलब्ध होती है, जो सीखने का नया रास्ता खोलती है।
- **आत्म-अभिव्यक्ति और रचनात्मकता:** युवा अपनी प्रतिभा, कला और विचारों को दुनिया के सामने रख सकते हैं, जैसे कि वीडियो, कविताएँ या ब्लॉग के माध्यम से।
- **सामाजिक जागरुकता:** यह मंच सामाजिक मुद्दों और अभियानों को बढ़ावा देने में मदद करता है, जिससे युवा नागरिक अधिकारों और सामाजिक न्याय के प्रति जागरुक होते हैं।

सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव (cons):

जहाँ एक ओर सोशल मीडिया से फायदे हैं, वहीं इसके नकारात्मक पहलू भी कम नहीं हैं, जो अक्सर युवाओं के लिए हानिकारक साबित होते हैं:

मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव:

- **तुलना और हीन भावना**: सोशल मीडिया पर लोग अक्सर अपनी सबसे अच्छी तस्वीरें और सफलताओं को दिखाते हैं, जिससे दूसरे युवा खुद की तुलना उनसे करते हैं। यह तुलना हीन भावना और आत्म-सम्मान में कमी का कारण बनती है।
- **चिंता और अवसाद:** 'लाइक' और 'कमेंट' की चाहत मानसिक तनाव पैदा करती है। अगर कोई पोस्ट पर पर्याप्त प्रतिक्रिया नहीं मिलती, तो युवाओं में चिंता और दु:ख की भावना बढ़ सकती है।

रिश्तों पर प्रभाव:

- **रिश्तों में दूरी:** लोग वर्चुअल दुनियाँ में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि वे अपने परिवार और दोस्तों के साथ बिताए जाने वाले समय को नजरअंदाज कर देते हैं। आमने-सामने से संवाद की जगह अब ऑनलाइन चैट ने ले ली है।

- **सतही रिश्ते:** सोशल प्लेटफार्म पर जो संबंध बनते हैं वो वास्तविक नहीं होते। कई बार लोग सिर्फ फॉलोअर बढ़ाने के लिए दोस्ती करते हैं, जिससे रिश्तों की गंभीरता खत्म हो जाती है। इस दिखावे की संस्कृति ने असली जीवन की चुनौतियों को छिपा दिया है।
- **साइबर बुलिंग(cyber-bullying):** ऑनलाइन धमकाना और अपमानित करना एक गंभीर समस्या है। यह युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा नकारात्मक प्रभाव डालता है।

निष्कर्ष: सोशल मीडिया एक दोधारी तलवार की तरह है। इसका सही प्रयोग युवाओं को सशक्त कर सकता है, लेकिन इसका अत्यधिक और गलत उपयोग उनके भविष्य और स्वास्थ्य को गंभीर नुकसान पहुँचा सकता है। यह हम पर निर्भर करता है कि हम इसका उपयोग कैसे करते हैं।

हमें सोशल मीडिया का उपयोग करते समय आत्म-नियंत्रण रखना चाहिए। माता-पिता और शिक्षकों को युवाओं को इसके खतरों के बारे में जागरुक करना चाहिए और उन्हें एक स्वस्थ डिजिटल जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

समाज के रूप में, हमें यह समझना होगा कि सोशल मीडिया पर दिखने वाली दुनियाँ हमेशा सच नहीं होती। हमें वर्चुअल दुनियाँ के बजाय असली जीवन के रिश्तों और अनुभवों को महत्व देना चाहिए, ताकि युवा एक संतुलित और खुशहाल जीवन जी सकें।

"हिंदी का ज्ञान राष्ट्रीय एकता को मजबूत करता है।"

– जवाहर लाल नेहरू

"हिंदी जनता की भाषा है और जनता की शक्ति है।"

– गणेश शंकर विद्यार्थी

"हिंदी भारत की प्रमुख जनभाषा है।"

– जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन

रामधारी सिंह 'दिनकर'

जयकिशोर कुमार
तकनीशियन – ए

आज मैंने अपने सहकर्मी से रामधारी सिंह 'दिनकर' जी के बारे में पूछा तो उन्होने कहा मुझे उनके बारे में कोई जानकारी नहीं है। मुझे सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ, फिर मैंने सोचा शायद उनको हिंदी भाषा की अधिक जानकारी न हो या उन्हें हिंदी साहित्य के बारे में कुछ पता न हो। लेकिन ऐसा नहीं था वे हिंदी लिखना, पढ़ना और बोलना जानते हैं। लेकिन उन्होने कहा कि मैं इनके बारे में कुछ नहीं जानता हूँ और मैं साहित्य के बारे में कुछ नहीं जानता। फिर मैंने सोंचा कि क्यूँ न मैं इनको 'दिनकर' जी के बारे में बता दूं। क्यूंकि अभी भी बहुत से ऐसे लोग होंगे जो उनके बारे में नहीं जानते होंगे। मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है कि मैं दिनकर जी के बारे में कुछ जानकारी साझा कर रहा हूँ और मुझे इस बात की भी खुशी है कि मेरे गृह स्थान भी दिनकर जी के गाँव से संबंधित है। आइये दिनकर जी के बारे में कुछ बातें जानते हैं-

रामधारी सिंह 'दिनकर' जी का जन्म 23 सितंबर 1908 ई. को बिहार के मुंगेर जिले (वर्तमान-बेगुसराय) सिमरिया गाँव में हुआ था। उनके पिताजी का नाम श्री रवि सिंह तथा माताजी का नाम श्रीमती मनरूप देवी था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा उनके गाँव से ही हुई तथा स्नातक की पढ़ाई पटना विश्वविद्यालय से पूर्ण की। उन्होंने कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। जैसे – अध्यापक, पत्रकार तथा संसद सदस्य। रामधारी सिंह 'दिनकर' एक प्रसिद्ध कवि और निबंधकार के साथ-साथ एक स्वतंत्रता सेनानी भी थे जिन्हें राष्ट्रकवि की उपाधि से सम्मानित किया गया। दिनकर जी को उनके कार्यों के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया जिसमें पद्म भूषण, साहित्य अकादमी और ज्ञानपीठ पुरस्कार शामिल हैं।

उनकी कविताओं में राष्ट्रीय भावनाएँ और प्रगतिवादी विचार देखे जा सकते हैं। उन्होंने अनेक कविताएँ लिखीं जिनमें उनकी प्रमुख रचनाएँ- जैसे- कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, हुंकार, उर्वशी, परशुराम की प्रतीक्षा, संस्कृत के चार अध्याय, भारतीय संस्कृति की एकता आदि पुस्तकें बहुत ही ज्ञानवर्धक हैं। यदि आपको कभी मौका मिले तो कोई भी एक किताब अवश्य पढ़ें। 'रश्मिरथी' कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित एक प्रसिद्ध काव्य है जिसमें उन्होंने कर्ण के चरित्र के माध्यम से जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत किया है। रश्मिरथी की कुछ पक्तियाँ इस प्रकार हैं –

जाने दो भीष्म के पितामह, जाने दो निषाद के पुत्र की,

जाने दो हस्तिनापुर के तम, कोई क्या जाने इतिहास को।

''क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो

उसको क्या जो दंतहीन, विषरहित, विनीत, सरल हो।''

इन पंक्तियों में कवि ने जीवन और मानवता के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया है। दिनकर जी ने हिंदी साहित्य के दोनों विधाओं में अपनी रचनाएँ लिखी हैं।

कार्यशील महिला

एम.स्वप्ना कुमारी
वरिष्ठ प्रशासनिक सहायक – ए

प्रस्तावनाः

आज के आधुनिक युग में महिलाएँ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। पहले जहाँ महिलाओं की भूमिका केवल घर तक सीमित मानी जाती थी, वहीं आज वे शिक्षा, विज्ञान, तकनीक, राजनीति, व्यापार, खेल और कला जैसे सभी क्षेत्रों में अपनी पहचान बना रही हैं। कार्यशील महिला समाज की प्रगति और राष्ट्र के विकास की मजबूत नींव है।

कार्यशील महिला का महत्वः

कार्यशील महिला न केवल परिवार का सहारा बनती है बल्कि राष्ट्र की अर्थिक स्थिति को भी सुदृढ़ करती है। उसका योगदान दोहरी भूमिका निभाता है – एक तरफ वह घर की जिम्मेदारियाँ संभालती है, तो दूसरी ओर कार्यक्षेत्र में अपनी प्रतिभा और परिश्रम से समाज में उदाहरण प्रस्तुत करती है।

वर्तमान समय में स्थितिः

शिक्षा के प्रसार और जागरूकता के कारण महिलाएँ अब विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ रही हैं। स्कूल की अध्यापिका से लेकर डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, बैंक अधिकारी, सेना अधिकारी और यहाँ तक की अंतरिक्ष यात्री बनने तक, कार्यशील महिलाओं ने यह साबित किया है कि वे किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं।

चुनौतियाँ:

हालाँकि कार्यशील महिलाओं को आज भी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। घर और बाहर की दोहरी जिम्मेदारी, असमान वेतन, कार्यक्षेत्र में भेदभाव, सुरक्षा की समस्या, इन चुनौतियों के बावजूद महिलाएँ निरंतर आगे बढ़ रही हैं।

समाज पर प्रभावः

कार्यशील महिला बच्चों को आत्मनिर्भरता और शिक्षा का महत्व सिखाती है। वह परिवार को बेहतर आर्थिक और सामाजिक आधार देती है। समाज में उसकी स्थिति सम्मानजनक बनती है, जिससे अन्य महिलाओं को भी प्रेरणा मिलती है।

"एक कार्यशील महिला अपने परिवार और समाज दोनों के लिए प्रेरणा होती है।"

आत्मसंतोष

मानसी शर्मा
आशुलिपिक-II

आत्मसंतोष का अर्थ है – स्वयं से संतुष्ट रहना। इसका मतलब यह नहीं है कि व्यक्ति प्रगति करना छोड़ दे बल्कि इसका अर्थ है कि वह अपनी उपलब्धियों का सम्मान करे और निरंतर प्रयास करते हुए वर्तमान में आनंद खोजे।

आत्मसंतोष मानसिक शांति और आभार का भाव है। आत्मसंतोष प्रसन्नता का मार्ग है। मानव जीवन निरंतर इच्छाओं और आकाक्षांओं से घिरा हुआ है। एक इच्छा पूरी नहीं होती कि दूसरी जन्म ले लेती है। इस अंतहीन दौड़ में मनुष्य सुख की तलाश करता है, परंतु वास्तविक सुख उसे बाहर नहीं, अपने अंदर ही मिल सकता है। हमारे इसी अंदर के सुख का नाम है 'आत्मसंतोष'

कुछ लोग मानते हैं कि आत्मसंतोष प्रगति में बाधक है। परंतु यह विचार सही नहीं है। आत्मसंतोष का अर्थ ठहराव नहीं है, बल्कि यह है कि व्यक्ति अपने वर्तमान से संतुष्ट रहकर आगे बढ़े। आत्मसंतोष हमें नई ऊर्जा और प्रेरणा देता है।

आज की व्यस्त जीवनशैली, प्रतिस्पर्धा और भौतिकवाद ने लोगों को असंतुष्ट कर दिया है। हम सब अधिक पाने की चाह में वर्तमान को जीना भूल गए हैं। इस कारण तनाव, चिंता, बेचैनी और अवसाद जैसी समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं।

यही मनुष्य अपनी स्थिति को सकारात्मक दृष्टि से स्वीकार करे और उसमें प्रसन्न रहना सीखे, तो जीवन कहीं अधिक सुखद और सरल हो सकता है।

स्वयं की स्वयं से तुलना करें और स्वयं में सुधार करें। यही हमारे मन में आत्मसंतोष उत्पन्न करता है।

संतोष प्राप्त करने के उपाय –

1. स्वयं को मिली हुई हर चीज का आभार प्रकट करें और विचार करें कि आप क्या सुधार कर सकते हैं।
2. स्वयं की तुलना किसी से न करें क्योंकि सबकी जीवन यात्रा अलग है।
3. सिद्धातों और नैतिकता को महत्व दें, न कि सिर्फ लाभ को।
4. दिखावे और भौतिकता से दूर होकर, सादा जीवन जिएं।

आत्मसंतोष पर तुलसीदास जी ने कहा था – "संतोष धन साम नाही कोई"

आत्मसंतोष का महत्व –

1. मानसिक शांति का स्रोत होने के कारण यह व्यक्ति को चिंता और तनाव से मुक्त रखता है।
2. आत्मसंतोष ईर्ष्या और तुलना से मुक्ति दिलाता है।
3. यह सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करता है।
4. आत्मसंतोष रिश्तों में मधुरता लाता है।

5. यह मानव को स्वाभिमानी बनाता है, अहंकारी नहीं।

सच्चा आत्मसंतोष कभी ठहराव नहीं लाता, बल्कि प्रयास को और अधिक सार्थक बनाता है।

महात्मा गाँधी ने एक बार कहा था – "संतोष प्रगति का शत्रु नहीं, मार्गदर्शक है।"

आत्मसंतोष और बचपन –

1. बचपन में आत्मसंतोष स्वाभाविक होता है। बच्चे छोटी – छोटी चीजों में खुश हो जाते हैं।
2. मिट्टी के खिलौनें, बारिश में भीगना या माँ की कहानी सुनकर सोना।
3. लेकिन जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, समाज हमें "अधिक पाने" की शिक्षा देता है और हम आत्मसंतोष से दूर हो जाते हैं।
4. इसलिए "बारिश में फिर भीगिये" और महसूस कीजिये कि बचपन की उस सरलता और स्वभाविकता में कितना आनंद है।

अब आपसे एक सवाल है –

क्या आप आत्मसंतुष्ट हैं ?

यदि 'हाँ' तो आप अवश्य ही खुश हैं लेकिन यदि आपका उत्तर 'नहीं' है तो आपको विचार करने की आवश्यकता है कि आप खुश हैं या नहीं।

क्योंकि आत्मसंतोष वह दीपक है, जो भीतर से उजाला करता है।

यह कोई वस्तु या परिस्थिति नहीं है बल्कि एक भावना है जो आपके दृष्टिकोण पर निर्भर करती है।

अंततः – "जीवन में सब कुछ मिल जाए, लेकिन आत्मसंतोष नहीं है तो कुछ भी नहीं है।"

अर्थात –

आत्मसंतोष से मानसिक शांति प्राप्त होती है।

इसलिए स्वयं की तुलना स्वयं से करके स्वयं में सुधार करना और स्वयं को आत्मसंतोषी बनाने में ही परम आनंद है।

स्वार्थी समाज

जीबन कुमार दास
वरिष्ठ तकनीकी सहायक – बी

आज का समय विज्ञान और तकनीक की प्रगति के कारण पहले से अधिक विकसित, सुसंस्कृत और आधुनिक दिखाई देता है। चारों ओर सुविधाएँ बढ़ी हैं, जीवन सरल हुआ है, साधन-संपन्नता का स्तर ऊँचा हुआ है। लेकिन यह भी कटु सत्य है कि इस आधुनिकता की दौड़ ने इंसान के हृदय को संकीर्ण कर दिया है। संवेदनाएँ दया और करुणा जैसी भावनाएँ पीछे छूट गई हैं और स्वार्थ ने अपना स्थायी स्थान बना लिया है। आज समाज को देखकर यही कहा जा सकता है कि हम एक स्वार्थी समाज में जी रहे हैं।

स्वार्थ का अर्थ है- केवल अपने लाभ और भलाई की चिंता करना, दूसरों के हित को नजरंदाज करना। यदि हम चारों ओर नजर डालें तो हर जगह यही प्रवृत्ति देखने को मिलती है। इंसान सुबह से शाम तक मेहनत करता है, लेकिन उसका लक्ष्य केवल अपने और अपने परिवार के लिए अधिक से अधिक धन, पद और सुविधा को जुटाना होता है। पड़ोसी या समाज के दु:ख – सुख से उसे कोई लेना-देना नहीं रह गया है।

यदि हम अतीत पर नजर डालें तो पाएँगे कि गाँव-गाँव में परस्पर सहयोग की परंपरा थी। खेती-किसानी से लेकर विवाह और उत्सव तक, सबकुछ सामूहिक रूप से होता था। लोग दूसरों के दु:ख को अपना दु:ख और दूसरों की खुशी को अपनी खुशी मानते थे। समाज का आधार परोपकार और आपसी विश्वास था।

परंतु आज शहरीकरण और उपभोक्तावादी संस्कृति ने इंसान को आत्मकेंद्रित बना दिया है। अब लोग त्योहार अकेले मनाते हैं, विवाह केवल दिखावे और प्रतिस्पर्धा का साधन बन गए हैं और पड़ोसियों के बीच संवाद तक समाप्त होता जा रहा है।

आज के समाज की सबसे दु:खद स्थिति यह है कि रिश्ते भी स्वार्थ की नींव पर टिके हैं। भाई-बहन केवल तब तक साथ रहते हैं जब तक उन्हें कोई लाभ मिलता है। मित्रता भी तभी तक निभती है जब तक उससे कोई फायदा है। माता-पिता, जिन्होंने अपने बच्चों के लिए जीवनभर कष्ट उठाया, बुढ़ापे में उपेक्षा और अकेलेपन का शिकार हो जाते हैं। समाचार पत्रों में प्राय: यह खबर पढ़ने को मिलती है कि बेटे ने अपने बुजुर्ग पिता को वृद्धाश्रम पहुँचा दिया। यह दृश्य देखकर लगता है कि स्वार्थ ने इंसान के हृदय को पत्थर बना दिया है।

शिक्षा कभी संस्कार और चरित्र निर्माण का माध्यम हुआ करती थी। लेकिन आज शिक्षा का उद्देश्य केवल अच्छी नौकरी और अधिक वेतन तक सीमित रह गया है। विद्यार्थी समाज की सेवा करने के बजाय व्यक्तिगत लाभ को प्राथमिकता देते हैं। यही कारण है कि भ्रष्टाचार, घूसखोरी, धोखाधड़ी जैसी बुराइयाँ बढ़ती जा रही हैं।

स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण समाज में आपसी विश्वास और भाईचारा कम हो रहा है। लोग एक-दूसरे से केवल लाभ के लिए जुड़ते हैं, और यदि लाभ न हो तो रिश्ता भी खत्म हो जाता है।

परिणामस्वरूप अकेलापन, अविश्वास, असुरक्षा और मानसिक तनाव बढ़ रहे हैं। स्वार्थ के कारण ही समाज में अपराध, हिंसा और भ्रष्टाचार का बोलबाला है। हर कोई चाहता है कि उसे सबकुछ मिल जाए, चाहे किसी और को कष्ट क्यों न उठाने पड़ें।

फिर भी यह कहना उचित नहीं होगा कि मानवता पूरी तरह से समाप्त हो चुकी है। आज भी ऐसे लोग मौजूद हैं जो दूसरों की भलाई के लिए निःस्वार्थ भाव से कार्य करते हैं। जब प्राकृतिक आपदाएँ आती हैं तो लोग पीड़ितों की मदद के लिए आगे आते हैं। कई समाजसेवी संगठन भूखों को भोजन, बीमारों को दवा और बेघर लोगों को आश्रम प्रदान करते हैं। ये कार्य समाज को यह याद दिलाते हैं कि इंसानियत अभी भी जिंदा है और आशा की किरण अभी बुझी नहीं है।

यदि हमें इस स्वार्थी समाज को बदलना है तो सबसे पहले हमें स्वयं में बदलाव लाना होगा। हमें बच्चों को छोटी उम्र से ही परोपकार, दया और सहानुभूति के संस्कार देने होंगे। शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी नहीं बल्कि चरित्र निर्माण होना चाहिए। सामाजिक और धार्मिक कार्यक्रमों के माध्यम से सहयोग और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देना होगा। जब हर व्यक्ति दूसरों की मदद में आनंद महसूस करेगा, तभी समाज वास्तविक अर्थों में प्रगतिशील और सुखी बन सकेगा।

आज का समाज स्वार्थ की गहरी खाईं में गिरता जा रहा है। भौतिक प्रगति के साथ-साथ नैतिक और मानवीय मूल्यों का पतन हो रहा है। यदि हमने इस स्थिति को नहीं बदला, तो ये हमें टूटे हुए रिश्तों, अकेलेपन और अशांति के अंधकार में ले जाएगा। हमें याद रखना चाहिए कि सच्चा सुख केवल अपने लिए जीनें में नहीं, बल्कि दूसरों के लिए जीनें में है। स्वार्थी समाज हमें बर्बादी की ओर ले जाता है, जबकि निःस्वार्थ समाज ही सच्चे अर्थों में सभ्यता और समृद्धि का प्रतीक है।

"हिंदी भारत की एकता और राष्ट्रीय भावना की प्रतीक है।"

– सेठ गोविंद दास

"हिंदी में वह शक्ति है जो जन-जन तक पहुँच सकती है।"

– मुंशी प्रेमचंद

"भारत की भाषाओं में हिंदी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है।"

– मैक्स मूलर

पानी रे पानी

जगबीर
तकनीकी अधिकारी - ए

कहाँ से आता है हमारा पानी और फिर कहाँ चला जता है हमारा पानी? हमने कभी इस बारे में कुछ सोचा है? सोचा नहीं होगा शायद, पर इस बारे में पढ़ा जरूर है? भूगोल की पुस्तक पढ़ते समय जल-चक्र जैसी बातें हमें बताई जाती हैं। सूरज, समुद्र, बादल, हवा, धरती, फिर बरसात की बूंदें और लो फिर बहती हुई एक नदी और उसके किनारे बसा तुम्हारा, हमारा गाँव या शहर। दूसरे भाग में यही नदी अपने चारों तरफ का पानी लेकर समुद्र में मिलती है। समुद्र से उठी भाप बादल बनकर पानी में बदलती है और फिर जल की यात्रा एक तरफ से शुरू होकर समुद्र में वापस मिल जाती है। जल-चक्र पूरा हो जाता है।

यह तो हुई जल चक्र की बात पर अब तो हम सबके घरों में, स्कूल में, माता-पिता के कार्यालय में, कारखानों और खेतों में पानी का कुछ अजीब सा चक्कर सामने आने लगा है। नलों में अब पूरे समय पानी नहीं आता। नल खोलने पर उससे सूँ-सूँ की आवाज आने लगती है। पानी आता भी है तो बेवक्त, कभी देर रात को, तो कभी बहुत सुबह। मीठी नींद छोड़कर घर-भर की बाल्टियाँ, बर्तन और घड़े भरते फिरो। पानी को लेकर कभी-कभी, कहीं-कहीं आपस में तू-तू, मैं-मैं भी होने लगती है। रोज-रोज के इन झगड़ों-टंटों से बचने के लिए कई घरों में लोग नलों के पाइप में मोटर लगवा देते हैं। इससे कई घरों का पानी खिंचकर एक ही घर में आ जाता है। यह तो अपने आस-पास के लोगों का हक छीनने जैसा काम है, लेकिन मजबूरी मानकर इस काम को मोहल्ले में कोई एक घर कर बैठे तो फिर और कई घर यही करने लगते हैं। पानी की कमी और बढ़ जाती है। शहरों में तो अब कई चीजों की तरह पानी भी बिकने लगा है। यह कमी गाँव-शहरों में नहीं बल्कि हमारे प्रदेशों की राजधानियों में और दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता, चेन्नई और बैंगलोर जैसे बड़े शहरों में भी लोगों को भयानक कष्ट में डाल देती है। देश के कई हिस्सों में तो अकाल जैसी हालत बन जाती है। यह तो हुई गरमी के मौसम की बात!

लेकिन बरसात के मौसम में क्या होता है? सब तरफ पानी ही बहने लगता है। हमारे-तुम्हारे घर, स्कूल, सड़कों, रेल की पटरियों पर पानी भर जाता है। देश के कई भाग बाढ़ में डूब जाते हैं। यह बाढ़ न गाँवों को छोड़ती है और न मुम्बई जैसे बड़े शहरों को! कुछ दिनों के लिए सब कुछ थम जाता है, सब कुछ बह जाता है।

ये हालात हमें बताते हैं कि पानी का बेहद कम हो जाना और पानी का बेहद ज्यादा हो जाना यानी अकाल और बाढ़ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यदि हम इन दोनों को ठीक से समझ सकें और सँभाल लें तो इन कई समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।

चलो थोड़ी देर के लिए हम पानी के इस चक्कर को भूल जाएँ और याद करें अपनी गुल्लक को। जब भी कोई हमें पैसा देता है, हम खुश होकर दौड़कर उसे झट से अपनी गुल्लक में डाल देते हैं। एक रुपया, दो रुपया, पाँच रुपया, कभी सिक्के, कभी छोटे-बड़े नोट सब इसमें धीरे-धीरे जमा होते जाते हैं।

फिर जब हम कभी हमें कुछ पैसों की जरूरत पड़ती है तो इस गुल्लक की बचत का उपयोग कर लेते हैं।

हमारी यह धरती भी इसी तरह की खूब बड़ी गुल्लक है! मिट्टी की बनी इस विशाल गुल्लक में प्रकृति वर्षा के मौसम में खूब पानी बरसाती है। तब रुपयों से भी कई गुना कीमती इस वर्षा को हमें इस बड़ी गुल्लक में जमा कर लेना चाहिए। हमारे गाँव में, शहर में, जो छोटे-बड़े तालाब, झील आदि हैं, वे धरती की गुल्लक में पानी भरने का काम करते हैं। इसमें जमा पानी जमीन के नीचे छिपे जल के भण्डार में धीरे-धीरे रिसकर, छनकर जा मिलता है। इससे हमारे भूजल भण्डार समृद्ध होता जाता है! पानी का यह खजाना हमें प्रत्यक्ष रूप से नहीं दिखता, लेकिन इसी खजाने से हम बरसात का मौसम बीत जाने के बाद पूरे साल भर तक अपने उपयोग के लिए घर में, खेतों में, पाठशाला में पानी निकाल सकते हैं। लेकिन एक दौर ऐसा भी आया जब हम लोग इस छिपे खजाने का महत्व भूल गये और जमीन के लालच में हमने अपने तालाबों को कचरे से पाटकर, भरकर समतल बना दिया! देखते-ही-देखते इन पर तो कहीं मकान, कहीं बाजार, स्टेडियम और सिनेमा आदि खड़े हो गए।

इस बड़ी गलती की सजा अब हम सबको मिल रही है। गर्मी के दिनों में हमारे नल सूख जाते हैं और बरसात के दिनों में हमारी बस्तियाँ डूबने लगती हैं! इसीलिए यदि हमें अकाल और बाढ़ से बचना है तो अपने आस-पास के जल स्रोतों की, तालाबों की और नदियों आदि की रखवाली अच्छे ढंग से करनी पड़ेगी।

जल-चक्र हम ठीक से समझें, जब बरसात हो तो उसे थाम लें, अपना भूजल भण्डार सुरक्षित रखें, अपनी गुल्लक भरते रहें, तभी हमें जरूरत के समय पानी की कोई कमी नहीं होगी। यदि हमने जल-चक्र का सही उपयोग नहीं किया तो हम पानी के चक्कर में फँसते चले जाएँगे।

संघर्ष से सफलता का सफर

सौरभ कुमार
तकनीशियन-ए

विद्यार्थी समय में मैं सेमिनार में श्रोता के रूप में जाया करता था। एक दिन विभिन्न अधिकारियों द्वारा एक सेमिनार का आयोजन किया गया था जिसमें आई. ए. एस., आई.पी.एस. एवं अन्य अधिकारी आए थे। एक एक कर अधिकारियों ने तैयारी की रणनीतियों के बारे में बताया कि सफलता के लिए किन-किन बातों पर ध्यान देना चाहिए। मुझे उन सभी अधिकारियों में सबसे अच्छी प्रेरणादायक कहानी लगी जो जिले के सिटी एसपी के रूप में कार्यरत थे। उन्होंने कहा कि सभी लोगों ने अपने-अपने संघर्ष एवं तैयारी का जिक्र किया। मैं एक कहानी के तौर पर सुनाता हूँ। एक लड़का जो कि छोटे से गाँव में रहता था। उसके पिता एक किसान थे। खेतों में जो अनाज उत्पन्न होता था उसी से परिवार का भरण-पोषण होता था। उसकी पढ़ाई के लिए गाँव के विद्यालय में नामांकन/दाखिला मिला। समयानुसार उसने दसवीं, ग्यारहवीं, बारहवीं की शिक्षा गाँव में स्थित विद्यालय से पूर्ण की। अब स्नातक की पढ़ाई के लिए गाँव में कॉलेज नहीं था इसलिए उसके पिता ने उसका नामांकन शहर के कालेज में करवाया। वह लड़का जब शहर में पहली बार गया तो उसने गाँव और शहर के बीच बहुत सारी विभिन्नताओं को देखा। गाँव में जहाँ खेत-खलिहान, हरे-भरे मैदान थे वहीं दूसरी तरफ शहर में बड़ी-बड़ी इमारतें। गाँव में जहाँ खाने-पीनें की चीजें सामान्य थीं वहीं शहर में बर्गर, पिज्जा जैसी चीजें उसके लिए नई थीं। शहर की नई चीजों को धारण करते हुए वह अपनी नई चीजों में लग गया। परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, जिसके कारण उसे कई सारी परेशानियाँ होती थीं। नई किताबें खरीदने के बजाए पुरानी किताबें खरीदकर पढ़ाई करता था। इसी बीच उसने प्रशासनिक सेवाओं की तैयारी शुरू कर दी। स्नातक की डिग्री पूर्ण होते ही उसने प्रशासनिक सेवा की परीक्षा दी। उसने परीक्षा पास कर ली फिर मुख्य परीक्षा एवं साक्षात्कार की परीक्षा भी पास की। फिर उनका चयन भारतीय प्रशासनिक सेवा में हो गया और आज वह व्यक्ति इस सभा में आप सभी के बीच बोल रहा है।

अंत में सभी को समझ आया कि वो लड़का वही है जो आज सिटी एसपी के रूप में कार्यरत है। निरंतर एवं दृढ़ निश्चय से की गई तैयारी सफलता तक पहुँचाती है।

सोहनलाल द्विवेदी द्वारा रचित कुछ पंक्तियाँ है जो इसमें संलग्न करना चाहता हूँ-

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

नन्ही चीटी जब दाना लेकर चलती है,

चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है।

मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,

चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।

आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।
डुबकियाँ सिंधु में गोताखोर लगाता है,
जा-जाकर खाली हाथ लौटकर आता है।
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में।
मुट्ठी उसकी खाली हर एक बार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

असफलता एक चुनौती है,
इसे स्वीकार करो, क्या कमी रह गई
देखो और सुधार करो।
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़कर मत भागो तुम।
कुछ किये बिना जय-जयकार नहीं होती,
कुछ किये बिना जय-जयकर नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

डी. एम. आर. एल. में राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम तथा इसमें उल्लिखित दिशानिर्देशों के अनुसार राजभाषा कार्यान्वयन के दृष्टिकोण से हमारा यह प्रयास होता है कि अधिकाधिक कार्य हिंदी में किया जाए। वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान हिंदी में किये गये कार्यों का विवरण इस प्रकार है -

हिंदी कार्याशालाएँ: प्रयोगशाला के कार्मिक अधिकाधिक कार्य हिंदी में कर सकें इसके लिए उन्हें कार्याशालाओं के माध्यम से प्रशिक्षित किया जा रहा है। प्रत्येक तिमाही में अलग-अलग कैडर के लिए कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं। वित्तीय वर्ष 2025-26 की पहली कार्यशाला 13 जून, 2025 को प्रशासनिक अधिकारी, तकनीकी अधिकारी, वरिष्ठ तकनीकी सहायक-बी, वाहन संचालक, तकनीशियन एवं फायरमैन वर्ग के लिए; द्वितीय कार्यशाला 14 अगस्त, 2025 को वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी, लेखा अधिकारी, वरिष्ठ तकनीकी सहायक-बी, तकनीशियन, भण्डार सहायक के लिए; तीसरी कार्यशाला 17 दिसंबर, 2025 को वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी, वरिष्ठ तकनीकी सहायक-बी, प्रशासनिक सहायक, तकनीशियन आदि के लिए आयोजित की गई। चतुर्थ हिंदी कार्यशाला दिनंक 24 फरवरी, 2026 को विभिन्न कैडर के लिए सम्मिलित रूप से आयोजित की गई।

तिमाही बैठकें: राजभाषा कार्यान्वयन के सुचारू अनुपालन की समीक्षा के उद्देश्य से निदेशक महोदय की अध्यक्षता में प्रत्येक तिमाही में बैठकें आयोजित की जाती हैं। इस वित्तीय वर्ष के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तीन बैठकें आयोजित की गई हैं। ये बैठकें इस प्रकार हैं- प्रथम तिमाही बैठक – 26.06.2025; द्वितीय तिमाही बैठक – 24.09.2025; तृतीय तिमाही बैठक – 15.12.2025. इस दौरान धारा 3(3) तथा राजभाषा नियम 5 पर विशेष रूप से चर्चा की गई।

नराकास की बैठकें: हमारा संस्थान 'नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति' का सदस्य है। इस वित्तीय वर्ष के दौरान नराकास की बैठकें 24.06.2025 तथा 19.12.2025 को आयोजित की गई थी। इनमें डीएमआरएल से प्रतिभागिता दर्ज की गई। नराकास की बैठकों एवं उनके द्वारा आयोजित अन्य गतिविधियों/ आयोजनों में संस्थान द्वारा नियमित रूप से भाग लिया जाता है। इन बैठकों के माध्यम से राजभाषा कार्यान्वयन को गति मिलती है।

हिंदी गृह पत्रिका: संस्थान में प्रत्येक वर्ष दो गृह पत्रिकाएँ प्रकाशित की जा रही हैं। इस वित्तीय वर्ष 2025-26 में हिंदी गृह-पत्रिका **रचना** अंक-19 (नियमित अंक) एवं **रचना** का द्वितीय तकनीकी अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

हिंदी पखवाड़ा एवं हिंदी दिवस: डीएमआरएल में 14 से 30 सितंबर 2025 के दौरान हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। दिनांक 14 एवं 15 सितंबर, 2025 को महात्मा मंदिर कन्वेंशन एवं एग्जिबिशन सेंटर, गांधीनगर, गुजरात में हिंदी दिवस और 5वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में संस्थान से प्रतिभागिता दर्ज की गई। तत्पश्चात् डीएमआरएल में हिंदी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं के अंतर्गत स्वतंत्र लेख (तकनीकी), स्वतंत्र लेख (गैर-तकनीकी), निबंध लेखन, श्रुतलेख, प्रारूप एवं टिप्पणी, पठन, कविता पाठ, हिंदी टंकण, वाक् प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी, अंत्याक्षरी आदि प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में 140 से

अधिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। दिनांक 30 सितंबर 2025 को आयोजित हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह में डॉ. प्रियदर्शिनी, सह-आचार्य, हिंदी विभाग, अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर डॉ. प्रियदर्शिनी जी ने राजभाषा के क्षेत्र से जुड़े अपने अनुभव साझा किए। साथ ही विज्ञान, तकनीक, खेल-कूद, पत्रकारिता, शेयर मार्केट, विज्ञापन के क्षेत्र में हिंदी के बढ़ते प्रयोग की जानकारी श्रोताओं से साझा की। कार्यक्रम के अंत में प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

हिंदी प्रोत्साहन योजना: हिंदी प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत सरकारी कामकाज मूलरूप से हिंदी में करने वाले 10 (दस) कार्मिकों को तथा 02 (दो) अधिकारियों को हिंदी में डिक्टेशन देने के लिए पुरस्कृत किया गया।

नवोन्मेषी कार्य

हिंदी हस्ताक्षर अभियान: डीएमआरएल में 7-14 अगस्त, 2025 के दौरान **हिंदी हस्ताक्षर अभियान** चलाया गया। दिनांक 07 अगस्त 2025 को निदेशक, डीएमआरएल द्वारा इसका शुभारंभ किया गया। इस अभियान में प्रयोगशाला के कार्मिकों ने बड़े ही उत्साह के साथ भाग लिया। लगभग आठ दिन तक चले इस कार्यक्रम में हिंदी एवं हिंदीतर भाषी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने हिंदी में हस्ताक्षर किए। दिनांक 14 अगस्त 2025 को निदेशक महोदय के संबोधन के साथ यह अभियान संपन्न हुआ।

आंतरिक चर्चा- परिचर्चा बैठक

प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के प्रति जागरुकता लाने एवं कार्यान्वयन को गति देने के उद्देश्य से डीएमआरएल में 27 नवंबर, 2025 को एक आंतरिक चर्चा-परिचर्चा बैठक का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला का ही एक रूप था जिसमें मुख्य रूप से प्रशासनिक कार्य करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रतिभागिता दर्ज की। इस दौरान सहायक निदेशक (राजभाषा) ने तिमाही प्रगति रिपोर्ट हेतु पत्राचार एवं दस्तावेजों के आंकड़ों के रखरखाव के बारे में जानकारी दी तथा निर्धारित प्रपत्र में इन आंकड़ों को भरते समय आने वाली समस्याओं के बारे में कार्मिकों के साथ चर्चा-परिचर्चा की। इसके साथ कार्मिको को हिंदी में कार्य करने हेतु प्रेरित करते हुए कहा की वे हिंदी में टिप्पड़ी लेखन, हिंदी में हस्ताक्षर, रजिस्टर में हिंदी में प्रविष्टियां, सेवा पुस्तिकाओं में हिंदी में प्रविष्टियां आदि के माध्यम से राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दे सकते हैं। इसके अतिरिक्त विक्रांत जे. ताकसाण्डे, तकनीकी अधिकारी- बी ने कार्मिकों को स्मृति आधारित अनुवाद टूल कंठस्थ 2.0 की उपयोगिता एवं इसका प्रयोग करने की जानकारी दी। इस कार्यक्रम में लगभग 75 कार्मिकों ने हिस्सा लिया जिसमें विभिन्न प्रशासनिक कार्यों से जुड़े समूहों के समूह प्रमुख भी सम्मिलित हुए।

हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण कार्यक्रम: हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण हेतु डीएमआरएल में केंद्र बनाकर दिनांक 28 अगस्त 2025 से 11 दिसंबर 2025 तक हिंदी आशुलिपि गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें डीएमआरएल के साथ-साथ हैदराबाद स्थित अन्य डीआरडीओ प्रयोगशालाओं के कार्मिकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। दिनांक 11 दिसंबर 2025 को सिकंदराबाद स्थित केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप-संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय में हिंदी आशुलिपि की परीक्षा संपन्न हुई। डी. एम.आर.एल से दो आशुलिपिकों ने परीक्षा लिखी एवं इसे उत्तीर्ण किया।

विश्व हिंदी दिवसः

विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में डीएमआरएल मे 5-16 जनवरी 2026 के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जैसे कि कविता पाठ, वाक-प्रतियोगिता, श्रुतलेख एवं सुलेख प्रतियोगिता तथा हिंदीतर भाषियों के लिए हिंदी मे परिचय देना आदि। इन प्रतियोगिताओं मे लगभग 175 की संख्या मे कार्मिकों ने उत्साह के साथ भाग लिया। दिनांक 13 फरवरी 2026 को संस्थान के ताम्हणकर सभागृह में इसका समापन समारोह किया गया। इस अवसर पर सहायक निदेशक ने मंच संचालन किया तथा जानकारी दी कि संस्थान में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन पहली बार किया जा रहा है। इस दौरान निदेशक डीएमआरएल डॉ. रा. बालमुरलीकृष्णन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक; आमंत्रित मुख्य अतिथि महोदया प्रो. टी. जे. रेखा रानी, आचार्य, हिंदी विभाग, अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद; डीएमआरएल राजभाषा अनुभाग के प्रभारी अधिकारी ने अपने विचार रखे। अंततः प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

हिंदी कार्यशालाएं

हिंदी कार्यशाला (13 जून 2025)

हिंदी कार्यशाला (13 जून 2025)

हिंदी कार्यशाला (13 जून 2025)

हिंदी कार्यशाला (13 जून 2025)

हिंदी कार्यशाला (14 अगस्त 2025)

हिंदी कार्यशाला (14 अगस्त 2025)

हिंदी कार्यशालाएं

हिंदी कार्यशाला (14 अगस्त 2025)

हिंदी कार्यशाला (14 अगस्त 2025)

हिंदी कार्यशाला (17 दिसंबर 2025)

हिंदी कार्यशाला (17 दिसंबर 2025)

हिंदी कार्यशाला (17 दिसंबर 2025)

हिंदी कार्यशाला (17 दिसंबर 2025)

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समारोह 2025

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समारोह 2025

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समारोह 2025

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समारोह 2025

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समारोह 2025

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समारोह 2025

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समारोह 2025

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समारोह 2025

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समारोह 2025

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समारोह 2025

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समारोह 2025

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समारोह 2025

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समारोह 2025

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समारोह 2025

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समारोह 2025

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समारोह 2025

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समारोह 2025

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समारोह 2025

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समारोह 2025

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समारोह 2025

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समारोह 2025

हिंदी की अन्य नवोन्मेषी गतिविधियां

'हिंदी में हस्ताक्षर' अभियान 2025

'हिंदी में हस्ताक्षर' अभियान 2025

'हिंदी में हस्ताक्षर' अभियान 2025

'हिंदी में हस्ताक्षर' अभियान 2025

आंतरिक चर्चा-परिचर्चा बैठक (27.11.2025)

आंतरिक चर्चा-परिचर्चा बैठक (27.11.2025)

हिंदी की अन्य नवोन्मेषी गतिविधियां

आंतरिक चर्चा-परिचर्चा बैठक (27.11.2025)

आंतरिक चर्चा-परिचर्चा बैठक (27.11.2025)

हिंदी आशुलिपि गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम

हिंदी आशुलिपि गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम

हिंदी आशुलिपि गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम

हिंदी आशुलिपि गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम

हिंदी की अन्य नवोन्मेषी गतिविधियां

हिंदी आशुलिपि गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम

हिंदी आशुलिपि गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम

हिंदी आशुलिपि गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम

हिंदी आशुलिपि गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम

विश्व हिंदी दिवस समारोह

विश्व हिंदी दिवस समारोह

हिंदी की अन्य नवोन्मेषी गतिविधियां

विश्व हिंदी दिवस समारोह

विश्व हिंदी दिवस समारोह

विश्व हिंदी दिवस समारोह

विश्व हिंदी दिवस समारोह

विश्व हिंदी दिवस समारोह

विश्व हिंदी दिवस समारोह

हिंदी की अन्य नवोन्मेषी गतिविधियां

विश्व हिंदी दिवस समारोह

विश्व हिंदी दिवस समारोह

विश्व हिंदी दिवस समारोह

विश्व हिंदी दिवस समारोह

विश्व हिंदी दिवस समारोह

मुख्य अतिथि प्रो.टी.जे.रेखा रानी, अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद

हिंदी की अन्य नवोन्मेषी गतिविधियां

विश्व हिंदी दिवस समारोह

विश्व हिंदी दिवस समारोह

विश्व हिंदी दिवस समारोह

विश्व हिंदी दिवस समारोह

विश्व हिंदी दिवस समारोह

विश्व हिंदी दिवस समारोह

डीएमआरएल गतिविधियों की झलकियां

62वां वार्षिकोत्सव 2025

62वां वार्षिकोत्सव 2025

62वां वार्षिकोत्सव 2025

62वां वार्षिकोत्सव 2025

62वां वार्षिकोत्सव 2025

62वां वार्षिकोत्सव 2025

डीएमआरएल गतिविधियों की झलकियां

62वां वार्षिकोत्सव 2025

डीआरडीओ दिवस 2025

स्वतंत्रता दिवस 2025

गणतंत्र दिवस 2025

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2025

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस 2025

डीएमआरएल गतिविधियों की झलकियां

स्वच्छता पखवाड़ा 2025

स्वच्छता पखवाड़ा 2025

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 2025

'रचना' अंक-18 का विमोचन

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

डॉ. रा. बालमुरलीकृष्णन

निदेशक, डीएमआरएल एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

सदस्यगण

डॉ. के. गोपीनाथ, वैज्ञानिक-एच

डॉ. पार्थ घोषाल, वैज्ञानिक-जी

बी. रामकृष्ण, वैज्ञानिक-जी

डॉ. एम मणिवेल राजा, वैज्ञानिक-जी

सौम्य देब, वैज्ञानिक-जी

डॉ. एस. रमेश कुमार, वैज्ञानिक-जी

डॉ. रा. शंकरसुब्रमण्यन, वैज्ञानिक-जी

डॉ. शिवनारायण साहू, वैज्ञानिक-एफ

डॉ. एम शंकर, वैज्ञानिक-एफ

डॉ. सरबजीत सिंह, वैज्ञानिक-एफ

डॉ. आदिराज श्रीनिवास, वैज्ञानिक-जी

एस. शशिनाथ, वैज्ञानिक-एफ

डॉ. पी. के. साहू, वैज्ञानिक-एफ

विपिन कुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी

अमित कुमार साहा, वरि. प्रशासनिक अधिकारी-I

एन. चिट्टि बाबु, वैज्ञानिक-जी

अमित कुमार, वैज्ञानिक-एफ

रजनीश गोयल, वैज्ञानिक-एफ

डॉ. जी प्रभु, वैज्ञानिक-एफ

सी. जयरामी रेड्डी, वैज्ञानिक-एफ

डॉ. ए. वेंकट रमण, वैज्ञानिक-एफ

एन बी जगताप, तकनीकी अधिकारी - डी

पवन कुमार, सहायक निदेशक(राजभाषा)

जय प्रकाश, तकनीकी अधिकारी-ए

आशीष कुमार मिश्र, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

डिजाइन एवं मुद्रण
पब्लीकेशन एंड पोलिग्राफी यूनिट (पापु)
डी एम आर एल, हैदराबाद